...यालय विभाग के ब्रह्मचारियों के मुकाबले में भी इस गुरुकुल ... ब्रह्मचारी ब्रह्मदत्त ने द्वितीय पारितोषक जीत कर इस ...ज्ज्वल किया था।

... अपना २५ वर्ष का जीवन समाप्त करके २६ वें वर्ष ... है। हमें पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार आर्य ... इसकी सहायता की है भविष्य में भी तन मन और ... सहायता करती रहेगी।

...के अन्त में, सन् १९३८ के फरवरी या मार्च में इस ...त्सव रजतजयन्ती महोत्सव के रूप में धूमधाम से ... में पूर्ण ... है कि इस कुल के प्रेमी आर्य भाई ... में कोई कसर बाकी न उठा रखेंगे।

सोमदत्त विद्यालंकार
स० मुख्याधिष्ठाता
तथा आचार्य

स्व० महात्मा मुंशीराम जी
[आपने १म वैशाख १९६९ को गु० कु० कुरुक्षेत्र की आधारशिला रखी थी]

...क इतिहा...

...म

...हात्मा मुंशीरा... ...भागीरथी के त... ...ल गुरुकुल स्थ... ...रंभ हुआ। थो... ...पितु देश देश... ...द सन् १९०... ...ई।

...र की आत्म... ...देशोपयोगी ... आप अभी ... ...सी ला० गोपी...

गुरुकुल-शिक्षाप्रणाली के प्रवर्तक ।

स्व० महात्मा मुंशीराम जी

[आपने १म वैशाख १९६९ को गु० कु० कुरुक्षेत्र की आधारशिला रखी थी]

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्रारम्भिक इतिहास

गुरुकुल कांगड़ी का प्रारंभ

ऋषि दयानंद के सच्चे अनुयायी दिवंगत महात्मा मुंशीराम ने २ मार्च १९०२ ईस्वी (१९५९ विक्रमी) को पवित्र भागीरथी के तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप पहले पहल गुरुकुल स्थापित किया, जिससे शिक्षा जगत् में एक नवीन युग का प्रारंभ हुआ। थोड़े ही सालों में इस गुरुकुल की ख्याति न सिर्फ भारत में अपितु देश देशान्तर में फैल गई। गुरुकुल कांगड़ी के जन्म के ६-७ वर्ष बाद सन् १९०९ में मुल्तान शहर में गुरुकुल की प्रथम शाखाकी स्थापना हुई।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का जन्म

सं० १९६६ को ला० ज्योतिप्रसाद जी रईस थानेसर की आत्मा में यह शुभ इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं अपनी सम्पत्ति किसी देशोपयोगी कार्य में लगाऊँ। तरह २ के विचार आपके सामने आये, आप अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाये थे कि सं० १९६७ में कौल निवासी ला० गोपीनाथ

जी की प्रेरणा से आप गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव देखने गये। वहां प्राचीन भारतीय आदर्श शिक्षाप्रणाली का सजीव चित्र देखकर आपके मन में भी गुरुकुल स्थापन कराने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। श्री महात्मा मुंशीरामजी की प्रेरणा से आपका यह विचार और भी दृढ़ होगया। आपने अपना यह विचार श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर की सेवा में रखा और गुरुकुल के लिये एक ग्राम (कंथल) में अपना आधा भाग १०४८ बीघा सभा के नाम रजिस्ट्री करा दिया। सभा ने आप की प्रार्थना को स्वीकार कर कहा कि यदि आप दस सहस्त्र रुपया और एकत्र करलें तो यह कार्य प्रारंभ किया जा सकेगा। श्रीमान् लाला जी ने प्रतिज्ञा की कि मैं स्वयं ही देने को उद्यत हूँ। तदनुसार सं० १९६९ की १ म वैशाख को इस गुरुकुल की स्थापना तथा प्रारंभिक उत्सव मनाया गया। वार्षिकोत्सव पर आसपास के शहरों से सहस्रों आर्य नरनारी कुल-भूमि में एकत्रित हुए। महात्मा मुंशीराम जी ने गुरुकुल स्थापना की सूचना देते हुए जो मार्मिक भाषण दिया उसके कतिपय वाक्य निम्न प्रकार थे:—

"जिस पवित्र धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया था, उसी भूमि में आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मंगलमय भगवान् करें कि इस गुरुकुल वृक्ष से ऐसे सुन्दर और सुगन्धित फूल और फल उत्पन्न हों जो भारत भूमि को फिर पुरानी उन्नत अवस्था में लाने में सहायक हों।"

गुरुकुल के प्रारंभिक सहायक

दानवीर ला० ज्योतिप्रसाद जी के अलावा, उनके मित्र ला० भगीरथ लाल जी ने भी तन मन और धन द्वारा गुरुकुल की जो सेवायें की हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। आप गुरुकुल के प्रारंभिक दिनोंमें अपना अमूल्य समय देकर प्रबंध के कार्य में बड़ी सहायता देते रहे। अपनी मृत्यु से पूर्व आपने २०००) नक़द (पुस्तकालयार्थ), अपना दयालपुर ग्राम तथा अपनी एक थानेसर की दूकान गुरुकुल को दान में दी थी।

आपके अलावा ला० गंगाराम जी इस्माइलाबाद वाले भी तन मन धन द्वारा बड़ी सहायता करते रहे।

निम्न लिखित महानुभावों ने भी गुरुकुल की जो सहायता गुरुकुल के प्रारंभिक दिन से अबतक की है वह अविस्मरणीय है।

ला० पतरामजी नरवाणा, ला०मुकंदलालजी रईस खेड़ी, ला०खेमचन्द जी पानीपत, ला० जीताराम जी लोहे वाले पानीपत, ला० आशाराम जी शाहपुर, ला० शालिग्रामजी भल्ला कैथल, ला० निरंजनदासजी कैथल, ला० शंकर दास द्वारका दास जी आढ़ती करनाल, ला० नरसिंह दास जी गुमथला गढ़, ला० नरसिंह दास जी करनाल, ला० विश्वेश्वर नाथ जी अम्बाला छावनी, ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली, ला० बनवारीलाल जी देहली, ला० मिलखासिंह गिरधारीलाल जी देहली, ला० शिवप्रसाद जी लुध्याना, पं० हीरालाल जी S. D. O. बव्याज़, ला० गोपीराम रिखीराम जी कैथल, ला०रामजीदास जी कालवे वाले सफ़ीदूं, ला० मिट्ठनलाल जी ठेकेदार जींद, ला० रलाराम मेलाराम जी देहली, ला० लक्ष्मीनारायण जी गाडोदिया देहली, ला० मोहरसिंह दारीमल पानीपत, भगत श्रीरामजी पानीपत, ला० गोविन्दरामजी रावलपिंडी, ला० शादीराम जी पानीपत, बा० उल्फतराय जी अलीगढ, ला० रामदासजी अग्रवाल पेशावर।

इन महानुभावों की समय २ पर की हुई सेवाओं के लिये यह गुरुकुल कृतज्ञ रहेगा।
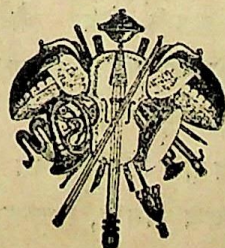
अध्याय १

प्रारम्भिक ७ वर्ष

(१९६९ से १९७५)

गुरुकुल के प्रारंभिक ७ वर्षों में गुरुकुल ने आशातीत उन्नति की। महात्मा मुंशीराम जी ने गुरुकुल कांगड़ी के जन्मकाल से अपने साथ काम करने वाले तथा बाद में शाखा गुरुकुल मुलतान के कार्य संचालन में अनुभवप्राप्त श्री पं० विष्णुमित्र जी को गुरुकुल का आचार्य तथा मुख्याध्यापक नियुक्त किया। प्रबन्धकर्ता का कार्य दानवीर ला० ज्योतिप्रसाद जी अपने मित्र श्री ला० भगीरथ लाल जी की सहायता से करने लगे। दुर्भाग्य से १ वर्ष बाद ही चैत्र कृष्णा १३ सं० १९०० को ला० ज्योतिप्रसाद जी अपनी संस्था को दुधमुहे बालक की अवस्था में छोड़ कर स्वर्ग सिधार गये। गुरुकुल के आन्तरिक प्रबंध संचालन के लिये एक "गुरुकुल सहायक सभा" की स्थापना की गई। इस सभा के प्रथम पदाधिकारी निम्नलिखित थे। प्रधान:—महात्मा मुंशीराम जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, उपप्रधान:—ला० नौबतरायजी, मंत्री:—ला० भगीरथ लालजी, कोषाध्यक्ष:—ला० गंगाराम जी रईस

इस्माइलाबाद, इन पदाधिकारियों के अलावा ५१ अन्य सभासद नियत हुए। द्वितीय वर्ष ला० भगीरथ लालजी तथा तृतीय वर्ष बा० गोपीनाथ जी प्रबंधकर्ता का कार्य करते रहे। बाद में श्री ला० नौबतरायजी संवत् १९८० तक (मृत्यु पर्यन्त) अवैतनिक रूप से प्रबंध कार्य करते रहे।

वर्तमान समय में गुरुकुल में जो भी उन्नति दिखाई देती है उस सब का श्रेय इन्हीं प्रारंभिक कार्यकर्ताओं, मुख्यतया श्री ला० नौबतरायजी तथा श्री पं० विष्णुमित्र जी को प्राप्त है।

प्रथम वर्ष २३ ब्रह्मचारी नवीन प्रविष्ट हुए जिनसे २ श्रेणियां बनीं, द्वितीय वर्ष २१ तथा तृतीय वर्ष १८ ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए। सं० १९७५ तक ब्रह्मचारियों की संख्या ११८ तक पहुंच गई और ८ श्रेणियां बनगईं। इन वर्षों में गुरुकुल दिन प्रतिदिन उन्नति करता चला गया। गुरुकुल में कार्य करने वाले कर्मचारी बड़े मनोयोग के साथ इस पुण्य व्रत को निबाह रहे थे।

गुरुकुल पर निरीक्षकों की सम्मतियां

(गुरुकुल की इस समय की अवस्था का दिग्दर्शन कराने के लिये कतिपय निरीक्षक तथा दर्शक महानुभावों की सम्मतियों का संक्षेप देना सहायक होगा।)

२६-८-६६ को श्री प्रो० गोवर्धन जी बी० ए० मुख्याध्यापक गुरुकुल कांगड़ी निरीक्षणार्थ पधारे, आपकी सम्मति निम्न प्रकार है:—

"ब्रह्मचारियों के रहने तथा भोजन आदि का प्रबंध बहुत उत्तम है। सभी ब्रह्मचारी प्रसन्न थे। दो ब्रह्मचारियों की बाहु पर फुंसियां थीं जो ठीक होरही थीं। ब्र० सोमदत्त का एक बाहु दिवाली के दिन झुलस गया था। पं० विष्णुमित्रजी ने उसकी धोतीसे आग हटानेमें अपना हाथ भी झुलसा लिया, जिससे प्रतीत होता है कि वे अपने उत्तरदातृत्व के पालन में अपने शरीर तक की परवाह नहीं करते। सोमदत्त इन दिनों ठीक होरहा था। मुझे दानी महाशय श्री ला० ज्योति प्रसाद जी रईस के दर्शन गुरुकुल में ही प्राप्त हुए। गुरुकुल सम्बन्धी कार्यों में वे पं० विष्णुमित्र जी की बड़ी भारी सहायता देते हैं। इमारत के काम में वे स्वयं निरीक्षण करते थे। उस दिन यज्ञशाला के नकशे की पैमाइश करवा रहे थे। यह उत्साह बहुत प्रशंसनीय है।"

१म २य वैशाख १९७० को श्री मा० सुखराम जी बी० ए० ने निरीक्षण कर निम्नलिखित सम्मति दी—

"प्रबन्ध सब प्रकार से उत्तम है। ब्रह्मचारियों के भोजनादि का प्रबन्ध भी बहुत उत्तम है। सब ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य भी अत्युत्तम है कोई रोगी नहीं है। सब विद्यालय तथा आश्रम का प्रबन्ध श्री पं० विष्णुमित्र जी के आधीन है। वे बड़ी उत्तमता से सब प्रबन्ध कर रहे हैं। सब अध्यापक महाशय तथा अन्य कर्मचारी भी उन्हीं के उत्साह से उत्साहित होकर अपना २ कार्य भली प्रकार कर रहे हैं।"

१९-२० आश्विन १९७० को श्री महात्मा मुंशीराम जी ने स्वयं निरीक्षण कर निम्न सम्मति दी:—

"इस समय ३६ ब्रह्मचारियों में से केवल एक को थोड़ा ज्वर था। व्यायाम और खेलों का उत्तम प्रबन्ध है। महाशय शिवराज चिकित्सक न केवल इलाज ही ठीक करते हैं प्रत्युत ब्रह्मचारियों के भोजन छादन तथा अन्य संरक्षा में भी सहायता देते हैं। जिसके लिये वह धन्यवाद के पात्र हैं। यहां के भंडारी महाशय तथा अन्य कर्मचारी भी सभी बड़े प्रेम से काम करते है। अपने नियत काम से अतिरिक्त कैसा भी काम आन पड़े, सब करने को तय्यार हो जाते हैं। यह भाव इस शाखा के कर्मचारियों का सराहनीय है। आश्रम के कमरों के बनवाने में म० गोपीनाथ जी ओवरसियर बड़ा पुरुषार्थ कर रहे हैं। इससे पहले उक्त महाशय गुरुकुल कांगड़ी में वर्षों तक अवैतनिक रूप से सेवा करते रहे हैं। इनकी इस निष्काम सेवा का गुरुकुल ऋणी रहेगा।"

११-१२-७० को श्री प्रो० सुखराम जी (आजीवन सदस्य गुरुकुल कांगड़ी ने निरीक्षण कर निम्न सम्मति दी:—

"इस शाखा को थोड़े ही कालमें हरप्रकार की सफलता प्राप्त हुई है। जिसका मुख्य कारण श्री पं० विष्णुमित्र जी मुख्याध्यापक ही हैं। श्री पं० जी की प्रेममयी मूर्ति सारे छात्र तथा अध्यापक मण्डल को प्रेमसूत्र में बांधे रहती है जिससे सारा कार्य आनन्द पूर्वक चलता रहता है। सारे ही अध्यापक बड़े उत्साह और प्रेम से काम करते हैं। ब्रह्मचारियों के साथ सब कार्यों में भाग लेते हैं। फुटबालादि खेलों में ब्रह्मचारीगण स्थानीय मिडिल स्कूल का मुकाबला करते हैं।

यह शाखा दिनों दिन उन्नति के मार्ग पर चल रही है। आठ श्रेणियों के लिए आश्रम पूरा हो गया है। विद्यालय भवन शेष रहता है जिसका नक्शा तैयार हो चुका है। दो कूप शाखा के अपने हैं और आस पास की भूमि भी मोल ले कर शाखा की भूमि को विस्तृत कर दिया गया है। श्री ज्योतिप्रसाद जी रात दिन शाखा की उन्नति के चिन्तन में लगे

रहते हैं, परमात्मा उनकी आयु बढ़ावे। आश्रम, भण्डार तथा गोशाला और वाटिका का प्रबन्ध भी प्रबन्धकर्ता पं० विष्णुमित्रजी के निरीक्षण में बड़ी उत्तम भांति चल रहा है। प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को उनकी अपनी गोशाला से दोनों समय (प्रात: तथा मध्याह्नोत्तर में) ताज़ा दूध मिलता है और मेरी सम्मति में ब्रह्मचारियों के अत्युत्तम स्वास्थ्य का यह भी एक कारण है। शाखा के कूप का जल बड़ा मीठा और स्वादु है।

इस शाखा की प्रबन्ध समिति के सभासदों का उद्योग बड़ा सराहनीय है जो अपने प्रान्त में शाखा के लिये प्रेम उत्पन्न कर रहे हैं और घूम २ कर धन एकत्रित करते हैं। परमात्मा इन सज्जनों के उत्साह को अधिक २ बढ़ावे।"

श्री पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार की १ कार्तिक १९७१ की निरीक्षण की सम्मति इस प्रकार है:—

'सामान्यत: शाखा का सब प्रबन्ध बहुत उत्तम है परन्तु इस समय सब कार्य मुख्याध्यापक जी को स्वयं करने पड़ते हैं। कार्यकर्ताओं की बड़ी न्यूनता है। पं० विष्णुमित्रजी के सिवाय केवल एक ही अध्यापक या अधिष्ठाता थे। यदि अध्यापक अच्छे मिल जावें तो जिस प्रकार मुख्याध्यापक जी पूरे प्रेम तथा परिश्रम से कार्य कर रहे हैं, शीघ्र ही शाखा बहुत उन्नत हो जावेगी। आशा है यह कमी शीघ्र पूरी हो जावेगी।

प्रबन्ध कर्ता का कार्य म० गोपीनाथ जी ओवरसियर करते हैं। यह बड़े पुरुषार्थी हैं इन से पंडित जी को बड़ी सहायता मिलती होगी।'

१ फाल्गुन १९७१ को श्री महात्मा मुन्शीराम जी ने निरीक्षण कर निम्न सम्मति दी :—

'इस शाखा के प्रबन्ध में दिनों दिन उन्नति होती जा रही है। इस का मुख्य कारण यहां के सब कर्मचारियों का गुरुकुल के काम में मनोयोग देना है। सब कर्मचारी समय आपड़ने पर छोटे से छोटा काम भी करने के लिये तय्यार हो जाते हैं। दातुन वाला नौकर न रहने पर पं० विष्णुमित्रजी कई बार स्वयं जंगल से ब्रह्मचारियों के लिये

दातुन काट कर लाते रहे हैं। आज हरट चलाने वाले नौकर के बीमार पड़जाने से डा० शिवराज जी स्वयं हरट चला रहे थे। श्री बाबू गोपीनाथ जी प्रबन्धकर्ता से लेकर नीचे तक सभी कर्मचारी प्रेम से काम करते दिखाई देते हैं।

शारीरिक व्यवस्था तथा स्वास्थ्य ब्रह्मचारियों का अत्युत्तम ही कह सकते हैं। तुलना ठीक नहीं होती परन्तु मेरा अनुभव है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की अपेक्षा भी कुछ अंशों में यहां के ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है।"

६-७-७२ को पुनः निरीक्षण कर श्री महात्मा जी लिखते हैं:—

"वाटिका बढ़ा दी गई है। फलों के वृक्ष भी लगाये गये हैं शाक भाजी तो आवश्यकता से बढ़कर उत्पन्न होती है। आशा है कि कुछ समय बाद फलभी पर्याप्त होजाया करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य ब्रह्मचारियों का उत्तम है। केवल एक को ऋतु ज्वर हो चुकाथा परन्तु वह भी परीक्षा में बैठा। ब्रह्मचारियों का शील तथा नम्रता का भाव देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। प्रबन्ध तथा नियम पालन में कोई प्रत्यक्ष त्रुटि नहीं दिखाई देती"

८-९-७२ को श्री पं० इन्द्रजी तथा २८-१०-१९७२ को श्री प्रो० महेश चरण सिन्हा और पं० रामचन्द्र जी निरीक्षणार्थ पधारे। १८-३-७३ को श्री पं० कन्हय्या लाल जी शास्त्री तथा मा० हरिगोपाल जी पधारे। और १८-६-७३ को पुनः पं० कन्हैय्यालाल जी शास्त्री निरीक्षणार्थ पधारे। इन सब महानुभावों ने भी गुरुकुलीय प्रबन्ध की भूरि २ प्रशंसा की। ८-११-७३ को श्री प्रो० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार निरीक्षणार्थ पधारे, आपने निरीक्षण कर निम्न सम्मति दी—

"प्रायः सभी ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है। उन्हें देखने से पता चलता है कि वे सब किसी नियम में पले हुए हैं। कार्यकर्त्ताओं का परिश्रम सराहनीय है।"

ऊपर लिखी निरीक्षणसम्मतियों को देखने से निम्न परिणाम निकाले जा सकते हैं:—

१—गुरुकुल के संस्थापक महात्मा मुंशीराम जी शाखाओं के प्रबन्ध तथा पठन पाठन के निरीक्षण का पूरा ध्यान रखते थे। सं० १९६९ में गुरुकुल की स्थापना से लेकर १९७३ संन्यास लेने के समय तक आप वर्ष में प्राय: ३-४ बार स्वयं अवश्य पधारते थे और षाण्मासिक तथा वार्षिक परीक्षायें लेने के लिये सर्वदा गुरुकुल के उपाध्यायों को भेजा करते थे। साथ ही उत्तम परामर्श देकर तथा कार्य की प्रशंसा करके कार्यकर्त्ताओं के उत्साह को बढ़ाया करते थे।

२—गुरुकुल के प्रारम्भिक सेवकों तथा कार्यकर्त्ताओं ने बहुत ही मनोयोग तथा असाधारण तत्परता से गुरुकुल का कार्य किया जिसके परिणाम स्वरूप गुरुकुल इन वर्षों में लगातार उन्नति करता चला गया।

३—प्राय: सभी निरीक्षकों ने इस गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य की प्रशंसा की है। महात्मा जी ने तो अपने गुरुकुल कांगड़ी की तुलना में भी यहां का स्वास्थ्य अधिक अच्छा लिखा है।

महात्मा जी का संन्यास ग्रहण

सम्वत् १९७४ की पहली वैशाख, १२ अप्रैल सन् १९१७ को इस कुल के संस्थापक श्रीमहात्मा मुंशीरामजी ने कनखल (मायापुर वाटिका) में संन्यासाश्रम में प्रवेश किया और मुंशीराम नाम त्यागकर 'श्रद्धानन्द संन्यासी' नाम धारण किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (जिसके अन्तर्गत ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र की शाखा है) के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य पद को भी त्यागकर आपने लोकसेवा के निर्द्वन्द्व क्षेत्र में प्रवेश किया।

गुरुकुल काँगड़ी के नये पदाधिकारी

श्री महात्मा मुंशीराम जी के संन्यास ग्रहण कर, चले जाने पर श्री ला० रामकृष्ण जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा प्रो० रामदेव जी गुरुकुल के आचार्य नियत हुये। श्री ला० रामकृष्ण जी पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान थे। वे अब जालंधर रहकर ही मुख्याधिष्ठाता का कार्य करते थे, और उनके स्थान पर प्रो० सुधाकर जी
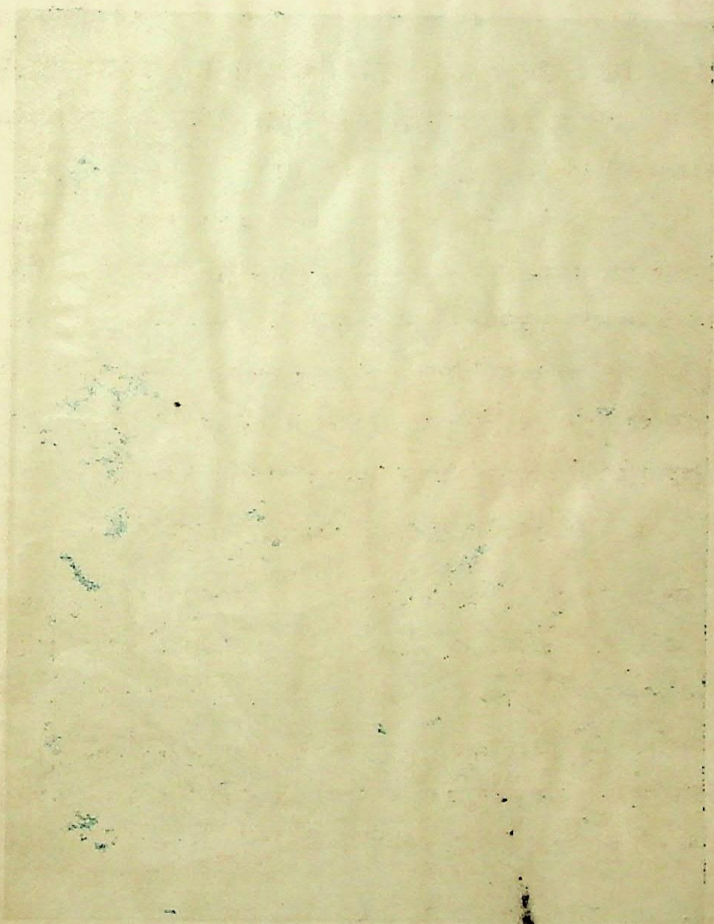
स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
(महात्मा मुंशीराम जी सन्यासी के वेश में)
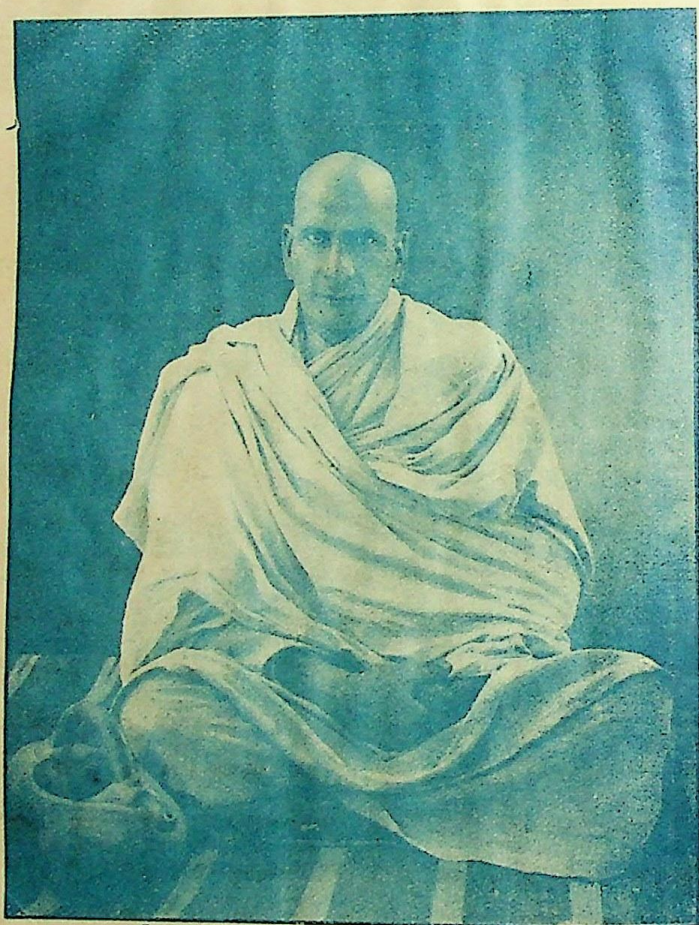
सन्यास ग्रहण करने के अनन्तर आप को जब कभी स्वास्थ्य-सुधार के लिये वायु-परिवर्तन की आवश्यकता होती थी तब आप गु० कु० कुरुक्षेत्र में आकर निवास किया करते थे ।

गुरुकुल में कार्य करते थे। गुरुकुल के इन नये अधिकारियों को गुरुकुल कांगड़ीका कार्य संभालने के लिये पर्याप्त ध्यान देना पड़ा, स्वभावतः ही वे शाखाओं के प्रबन्धकी तरफ पर्याप्त ध्यान न दे सके। महात्मा मुन्शीराम जी के मुख्याधिष्ठातृत्व में जिस प्रकार वर्ष में कई वार निरीक्षणार्थ कई महानुभाव गुरुकुल में आया करते थे उस प्रकार इन दिनों में नहीं आते रहे। शाखा के हक़ में यह बात बहुत हानिकारक साबित हुई।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल में निवास

संन्यासाश्रम में प्रवेश करने के समय स्वामी जी का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ा हुआ था, कई बीमारियों ने आपके शरीर में घर किया हुआ था। सच्चे परिव्राजक के तौर पर घूम २ कर देश तथा समाज की सेवा के योग्य स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिये मित्रों ने आपको पहले किसी स्वास्थ्य-प्रद स्थान पर रह कर स्वास्थ्य लाभ करने की सलाह दी। तदनुसार आपने अपने प्रिय गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आकर ४-५ महीने निवास किया। आप कुछ दिन गुरुकुल की धर्मशाला के ऊपर के चौबारे में निवास करते रहे। पर पीछे से अधिकारियों से यह कह कर कि मेरे धर्मशाला में ठहरने से यात्रियों को कठिनाई होगी, आपने अपने भक्त कलकत्ते के मशहूर दानवीर सेठ श्री जयनारायण जी को प्रेरणा करके गुरुकुल के मुख्य द्वार पर अपने निवास के लिये चौबारा बनवा दिया। आगे जब भी कभी आपका स्वास्थ्य बिगड़ता था आप स्वास्थ्य सुधारने के लिये इसी गुरुकुल में पधार कर इसी चौबारे में निवास किया करते थे।

आप गुरुकुल में लग भग ४-५ मास रहे। इन दिनों यद्यपि स्वास्थ्य लाभ के लिये अनुकूल ऋतु न थी तथापि इन ४-५ मास के निवास से आपके स्वास्थ्य में आशातीत उन्नति हुई। आपका वज़न ५६ पौंड बढ़ गया था।

इस निवास काल में आपने 'आर्यसमाज का इतिहास' लिखने के अपने पुराने संकल्प को पूरा करने का निश्चय किया। इतिहास की

सामग्री जमा करने तथा प्रचार के प्रयोजन से दो मास के दौरे का कार्य-क्रम बनाकर आप निकल पड़े। दो मास के दौरे के बाद पुनः कुरुक्षेत्र में पधारे। आपने अभी कार्य प्रारम्भ किया ही था कि गुरुकुल-कांगड़ी के सामयिक आचार्य श्री रामदेव जी के आग्रह तथा अन्तरंग सभा की प्रार्थना पर आपने गुरुकुलकांगड़ी में ही बैठकर इतिहास लिखने का निश्चय किया। तदनुसार आप यहां से गुरुकुल कांगड़ी चले गये।

आपके इस निवास से गुरुकुलवासी ब्रह्मचारियों तथा अध्यापकों को बहुत लाभ हुआ।

अध्याय २

परिवर्त्तन के दो वर्ष

(सं० १९७६-१९७७)

सम्वत् १९७४ की १ म वैशाख को श्री महात्मा मुंशीराम जी ने संन्यास लेकर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य पद का परित्याग कर दिया। जब तक आप आचार्य रहे आप बराबर स्वयं अथवा अन्य उपाध्यायों के द्वारा इस शाखा का निरीक्षण करते अथवा कराते रहे। आपके कार्य परित्याग के बाद इस निरीक्षण में अधिकाधिक शिथिलता आने लगी। गुरुकुल को निरीक्षण पुस्तक को देखने से पता चलता है कि जहां १९७३ तक वर्ष में दो दो तीन तीन बार तक निरीक्षणार्थ आचार्य जी तथा अन्य महानुभाव पधारते रहे वहां १९७४ तथा ७५ के वर्ष में कोई महानुभाव निरीक्षणार्थ नहीं पधारे। इसका परिणाम बहुत भयंकर हुआ। गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओं तथा प्रबन्ध समिति के सदस्यों में परस्पर मतभेद पैदा हो गया। इस मतभेद ने बहुत उग्र रूप धारण कर लिया। इसके परिणामस्वरूप गुरुकुल के मुख्याध्यापक श्री पं० विष्णुमित्र जो यहां से त्यागपत्र देकर चले गये और गुरुकुल कांगड़ी

में प्रधानाधिष्टाता तथा अध्यापक का कार्य करने लगे गुरुकुल के प्रबन्ध कर्त्ता श्री ला० नौबतराय जी भी अपने सहयोगी के चले जाने से अन्य मनस्क से होकर कार्य करते रहे। कुछ समय तक ला० सीताराम जी, ला० साकुम्भरीदास जी तथा ला० गोपीनाथ जी आदि महानुभाव मुख्यतया प्रबन्ध कर्त्ता का कार्य करते रहे। श्री पं० विष्णुमित्र जी के चले जाने पर क्रमशः पं० रामचन्द्र जी विद्यालंकार, पं० शशिभूषण जी विद्यालंकार, मा० काशीराम जी तथा पं० राजेन्द्रबल जी विद्यालंकार आदि महानुभाव दो वर्षों में मुख्याध्यापक का कार्य करते रहे। प्रबंध-कर्त्ता तथा मुख्याध्यापक के आये दिन के परिवर्त्तनों के कारण गुरुकुल की अवस्था दिन प्रति दिन शोचनीय होने लगी। पहले गुरुकुल में ८ श्रेणियां तक बन चुकी थीं। अब ऊपर की ३-४ श्रेणियों के ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगड़ी भेज दिये गये। आर्थिक अवस्था भी शोचनीय होने लगी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी दुबारा गुरुकुल में

११ फरवरी सन १९२० को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी पुनः गुरुकुल लौट आये और मुख्याधिष्ठता तथा आचार्य दोनों पदोंका चार्ज ले लिया। चार्ज लेते ही ५-६ दिनों में गुरुकुल कांगड़ी की योग्य व्यवस्था करके आप गुरुकुल कुरुक्षेत्र के उत्सव में पधारे। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की शोचनीय अवस्था का अध्ययन कर आप इसकी अवस्था को सुधारने का प्रयत्न करने लगे। गुरुकुल के प्रबन्धकर्त्ता श्री ला० नौबतराय जी ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि वे किसी तरह पुनः श्री पं० विष्णुमित्र जी को यहां आने के लिये राजी कर लें। श्री स्वामी जी महाराज की आज्ञा पर पं विष्णुमित्र जी ने १७-१२-१९७७ से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पुनः मुख्याध्यापक रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया।

गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी के १९ वे वार्षिक वृत्तान्त (चैत्र १९७७ से फाल्गुन १९७७ तक) के पृष्ठ १२ में इस परिवर्त्तन के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है।

"प्रबन्ध में उलट फेर:—वर्ष भर महा विद्यालय आश्रम के अध्यक्ष प्रो० सुखराम जी रहे और विद्यालय के प्रधानाधिष्ठाता पं० विष्णुमित्र जी रहे। दोनों ही आश्रमों का कार्य वर्ष भर बड़ी शान्ति से चलता रहा। वर्ष के अन्त में शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र की शोचनीय दशा का सुधार करने के लिये पं० विष्णुमित्र जी मुख्याध्यापक रूप से भेजदिये गये।"

इसी वृत्तान्त के पृष्ठ सं० २१ में शाखाओं के वृत्तान्त देते हुए इस प्रकार लिखा है:—

"गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रबन्ध में बहुत परिवर्तन आते रहे परन्तु संतोष की बात है कि फिर भी वर्ष के अन्त में परिणाम बुरा नहीं निकला। वर्ष के अन्त में शाखा के प्रबन्धकर्ता के आग्रह पर पं० विष्णुमित्र जी को मुख्याध्यापक बनाकर भेज दिया गया।"

इसी परिवर्तन के समय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आन्तरिक प्रबन्ध संचालन के लिये जो "गुरुकुल सहायक सभा' बनी हुई थी वह भी तोड़ दी गई और शाखा गुरुकुलका सब प्रबन्ध सीधा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी के हाथ में दे दिया गया। इस समय से लेकर सं० १९८५ तक यही प्रबन्ध रहा।

अध्याय ३

विकास के ७ वर्ष

(सं० १६७८ से १६८४)

१७-१२-१६७७ को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य गुरुकुल कांगड़ी के आदेशानुसार पं० विष्णुमित्रजी गुरुकुल में मुख्याध्यापक नियुक्त होकर आये। १६७७ तक गुरुकुल में सिर्फ ५ श्रेणियां रहगई थीं। १६७८ में वे बढ़कर ६ तथा १६७६ में ७ और १६८० में ८ हो गईं। ब्रह्मचारियों की संख्या भी जो १६७७ में ७२ रहगई थी १६८० में बढ़कर १५३ होगई। इन तीन वर्षों में यह गुरुकुल दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता चलागया।

गुरुकुल कांगड़ी के प्रबन्ध में परिवर्त्तन

फरवरी १६२० से अक्तूवर १६२१ तक लगभग डेढ़ वर्ष गुरुकुल में कार्य करके श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पुनः कार्य परित्याग कर विस्तृत सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के लिये चलेगये। आप के स्थान पर श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी मुख्याधिष्ठाता तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज आचार्य तथा प्रो० रामदेवजी शिक्षा

गु० कु० कुरुक्षेत्र का पुराना स्टाफ
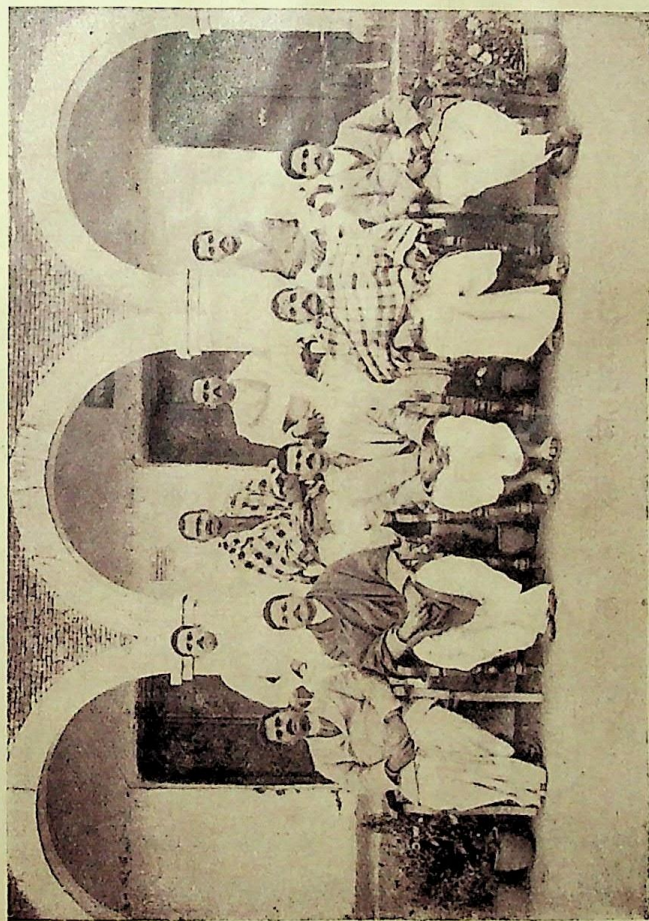
खड़े हुए बायीं ओर से:-पँ० वेदमित्रजी, मा० चिरंजीलालजी, मा० नौबतराय जी, म० श्रद्धाराम कोषाध्यक्ष। बैठे हुए बायीं ओर से:-डा० शिवराज, पं० सोमदत्तजी मुख्याध्यापक, पं० भगीरथ शास्त्री, मा० धर्मदेव जी बी० एस० सी०, मा० रणजित राय जी।

सम्बन्धी उपाचार्य नियत हुए। बाद में श्री स्वामी सत्यानन्द जी के त्यागपत्र देकर चले जाने से प्रो० रामदेव जी ही पुनः आचार्य नियुक्त हुए।

गुरुकुल पर दैवीय आपत्ति

सं० १६८० के अन्तिम दिन गुरुकुल के लिये अच्छे नहीं निकले। वार्षिकोत्सव के बाद श्री पं० विष्णुमित्र जी ने मुख्याध्यापक पद से त्यागपत्र देदिया और आपके सहकारी, गुरुकुल के जन्मकाल से निष्काम भाव से गुरुकुल की सेवा करने वाले श्रीला० नौबतरायजी का गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के चौथे दिन ६-१२-८० को देहावसान हो गया। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के २२-२३ वें वार्षिक वृत्तान्त में पृष्ठ ४० पर इस सम्बन्ध में निम्न लिखित लिखा है:—

"चतुर्थ दिन श्री ला० नौबतराय जी, जो कि शाखा कुरुक्षेत्र के प्रबन्धकर्त्ता थे, और इस शाखा के लिए अनथक कार्य करने वाले बड़े उद्योगी, धीर, निष्काम सेवी और अनुभवी महानुभाव थे, हमें दुःखित कर विदा हो गये। उन्हें मलावरोध की पुरानी शिकायत थी, कई (६-१०) दिनों से सर्वथा मल त्याग न होने से रोग ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। न जाने अन्दर से रुधिर की नस नाड़ियां फट गईं कि बराबर खून की उल्टी और दस्त होने लगे। उत्सव पर पधारे हुए सभी सुयोग्य डाक्टरों ने देखा और चिकित्सा की परन्तु होनी के आगे बस न चला। देखते ही देखते ओ३म् ओ३म् कहते प्रसन्न वदन, शान्त चित्त होकर इस भौतिक, नश्वर शरीर को छोड़ते हुए दिखलाई दिये। इस सब कष्ट को जिस धीरता, शान्ति और प्रसन्नता से झेला वह इस बात का द्योतक था कि उनका आत्मा कितना निर्भय, धीर शान्त शुद्ध और पवित्र था।"

मालूम ऐसा पड़ता है कि अन्दर से रुधिर की नस नाड़ियों के फटने का कारण अत्यधिक परिश्रम का करना था। आपका स्वास्थ्य वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन तक ठीक था। तीसरे दिन उत्सव में यात्रियों के

ठहरने के लिए बनाये हुए फूंस के छप्परों में भयङ्कर आग लग गई। इस आग को बुझाने का प्रयत्न करने में लाला जी ने अपने भारी तथा अस्वस्थ शरीर की तनिक भी परवाह नहीं की, मालूम होता है कि इसी परिश्रम के कारण पेट के अन्दर को कोई नस नाड़ी फट गई, और रात के समय आपको खून की कै तथा खून के दस्त आने लगे थे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के नये अधिकारी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रारम्भ काल से कन्धे से कन्धा भिड़ाकर पारस्परिक सहयोग से अनथक काम करने वाले दोनों महानुभावों की छाया से वंचित होने पर कुछ समय तक ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब कुल की नाव भयङ्कर झंझावात से उत्पन्न जल की थपेड़ों की मार को सहन न कर सकेगी और डूबे बिना न रहेगी।

गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के बाद गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी ने गुरुकुल के स्नातक श्री पं० विष्णुमित्र जी के पुत्र पं० सोमदत्त जी विद्यालङ्कार को बुलाकर अस्थायी रूप से मुख्याध्यापक का कार्य सौंप दिया। प्रबन्ध का कार्य करने के लिए रावलपिण्डी के श्री लाला गोविन्दराम जी को (जिन्होंने अभी दो वर्ष पूर्व अपने पुत्र सुखदेव के स्मृति चिन्ह के रूप में ४०००) की लागत से 'सुखदेवाश्रम' बनवाया था) प्रबन्ध कर्त्ता नियत किया।

श्री पं० सोमदत्त जी अभी नवयुवक थे, पिछले साल ही गुरुकुल से स्नातक हुए थे, दूसरे लाला गोविन्द राम जी भी गुरुकुलीय प्रबन्ध से नावाकिफ थे इसलिए सब कुलवासियों तथा कुल के प्रेमियों का यह भय, कि कुल की किश्ती नातजुर्बेकार लोगों के हाथ में सुरक्षित नहीं रहेगी, सर्वथा सच ही था, पर ईश्वर की कृपा तथा सहायता से दोनों महानुभावों ने इस काम को अच्छी तरह संभाल लिया।

ला० नौबतराय जी का स्मारक

गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव से लौटकर आने पर श्री लाला

नौबतरायजी की मृत्यु के समाचार को सुनकर सब कुलवासियों को अपार दुःख हुआ। उसी दिन एक शोक सभा की गई इस सभा में वक्ताओं ने शोक से रुंधे हुए गले से स्वर्गवासी लाला जी के गुणों का कीर्तन तथा शोक प्रकाश किया। सभा के सभापति श्रीपण्डित सोमदत्त जी मुख्याध्यापक ने अपने भाषण में कहा कि "आज इस काल के प्रारम्भ से निष्काम भावसे इसकी सेवा करनेवाले लालाजी हम में नहीं हैं। लालाजी ने इस कुल की अवैतनिक रूपसे जो सेवायें की हैं उनकी स्मृतिको अमर बनाये रखने के लिए उनका एक स्मारक बनाना आवश्यक है। अन्तिम दिनों में लालाजी की इच्छा इस कुरुकुलमें चिकित्सालयके लिए पृथक् मकान बनाने की थी, सम्प्रति आश्रम में ही एक कमरा चिकित्सालय के काम में आ रहा है। क्या ही अच्छा हो यदि हम कुलवासी शीघ्र ही उपयुक्त धन एकत्रित करके उनकी उचित यादगार कायम करदें। श्री मुख्याध्यापक जी के प्रस्ताव का सब कुलवासियों ने स्वागत किया और उसी समय लगभग ५००) धनराशि सभा में ही एकत्रित हो गई। गुरुकुल के अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों ने भी इसमें बहुत भाग दिया।

लालाजी की उपयुक्त यादगार बनानेका यह प्रस्ताव स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की सेवा में भी भेजा गया। आपने न केवल इस प्रस्तावका समर्थन किया अपितु स्वयं पत्र लिख कर आस पास की समाजों के गण्यमान्य व्यक्तियों को गुरुकुल में निमन्त्रित किया और स्वयं भी पधार कर सबके सामने यह प्रस्ताव रखा और समाजों के नाम इस फण्ड के लिए धन बांट कर लगा दिया। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आश्रम के पश्चिम की तरफ़ इस चिकित्सालय की आधार शिला ६-४-२५ को श्री स्वामी जी महाराज के करकमलों से रखवाई गई। और २-३-३० को चिकित्सालय बन चुकने पर श्री कुंवर रणंजय सिंह जी एम. एल. ए राजकुमार अमेठी राज्य के हाथों इसका उद्घाटन समारोह किया गया।

गुरुकुलीय प्रबन्ध में परिवर्त्तन

श्री पं० सोमदत्त जी को मुख्याध्यापक का कार्य सुचारु रूप से करता देख उन्हें इस पद स्थिर कर दिया गया। आप १४-१०-८० से लेकर १९-७-८५ तक बड़ी योग्यता से इस कार्य को करते रहे। गुरुकुल के प्रबन्ध कर्ता श्री ला० गोविन्दराम जी शारीरिक स्वास्थ्य के ठीक न रहने से ५-६ मास बाद ही १५-५-८१ को लम्बी छुट्टी लेकर चले गये, आपके स्थानपर श्रीयुत धर्मदेवजी बी० एस० सी० प्रबन्ध कर्त्ता का कार्य करने लगे। आपने लगभग डेढ़ साल तक प्रबन्धकर्ता का कार्य किया, बाद में गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी तथा आचार्य श्री प्रो० रामदेव जी ने आपसे यह कार्य लेकर प्रबन्धकर्त्ता का काम भी श्री पं० सोमदत्तजी के हाथ सौंप दिया। सं १९८२ से सं० १९८५ तक श्री पं० सोमदत्त जी ही मुख्याध्यापक तथा प्रबन्धकर्त्ता के दोनों कार्यों को योग्यता से करते रहे।

१९७८ से १९८४ तक के काल पर एक दृष्टि

इस काल को यदि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इतिहास का सुवर्णीय काल कह दिया जाय तो अत्युक्ति न होगी। गुरुकुल के प्रारम्भ के ७ साल गुरुकुल रूपी वृक्ष की जड़ें जमने में लगे। उसके बाद २ वर्ष इस वृक्ष के लिए बड़ी आपत्ति के बीते। यदि प्रारंभिक ७ वर्षों में इस वृक्ष की जड़ें पर्याप्त रूप से न जम गई होतीं तो इन दो सालों में आये हुए प्रबल झंझावात के थपेड़ों से यह वृक्ष सर्वथा उखड़ गया होता। गुरुकुल के लिये ये दो वर्ष कड़ी परीक्षा के थे। इन वर्षों के व्यतीत हो जाने पर अब गुरुकुल की स्थिरता पर किसी को संदेह न रहा। सं० १९७८ से सं० १९८४ के समय में भी १-२ भयंकर हवा के झोंके आये पर यह कुलवृक्ष इन सब को सहन कर गया और

गु० कु० कुरुक्षेत्र के विद्यार्थी और अध्यापक (संवत १९९३)
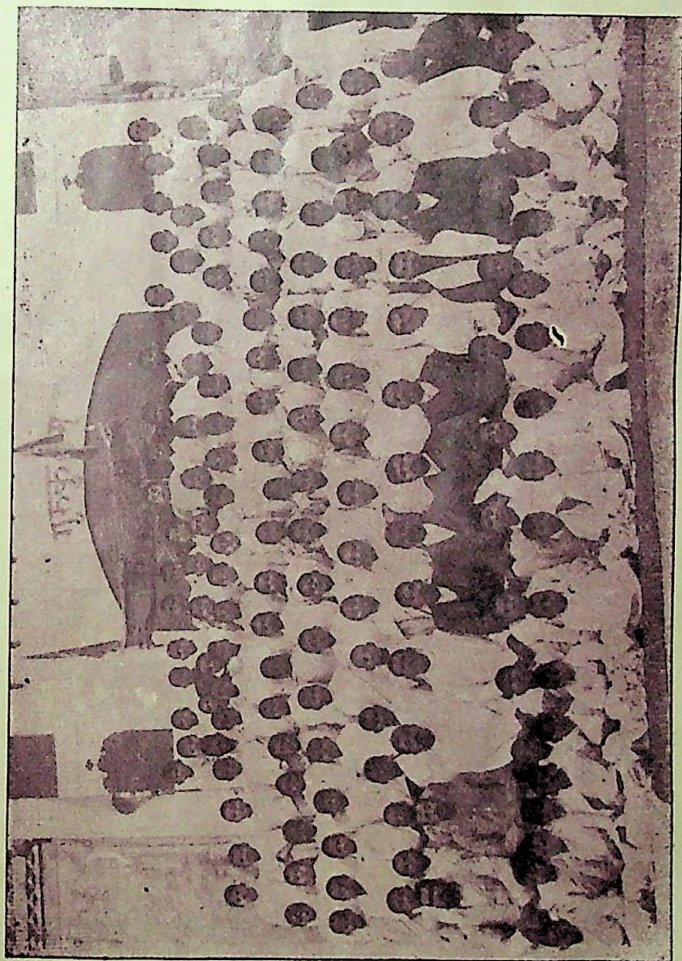
नीचे से दूसरी पंक्ति में अध्यापक तथा अन्य कर्मचारी बैठे हैं।

विचलित नहीं हुआ। सं० १९८० के अन्त में सहसा श्री पं० विष्णुमित्र जी के त्यागपत्र देकर चले जाने तथा ला० नौबतरायजी के देहावसान हो जाने से यही आशंका पुन: उपस्थित हुई थी, पर एकतो उपर्युक्त दोनों महानुभावों ने अपनी विदाई से पूर्व ही इस कुल की जड़ें इतनी मजबूत कर दी थीं कि अब इसके उन्मूलन की आशंका व्यर्थ थी, दूसरे गुरुकुल के नये अधिकारियों ने अपने पुराने कार्यकर्त्ताओं से प्राप्त अनुभव से लाभ उठा कर इसे अच्छी तरह संभाल लिया।

इस काल में गुरुकुल में ८ श्रेणियां रहीं और ब्रह्मचारियों की संख्या अधिक से अधिक (१५० के लग भग) रहती रही। अध्यापक मंडल में भी योग्यतम महानुभाव कार्य करते रहे। गुरुकुल में कई नई इमारत भी बनीं। आर्थिक अवस्था भी पूर्वापेक्षया बहुत अच्छी रही। गुरुकुल के स्थिर कोष को बढ़ाने का प्रयत्न किया गया। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी अकसर गुरुकुल के निरीक्षणार्थ यहां पधारते रहे और प्रबन्धकार्य में सहायता एवं उचित परामर्श देते रहे।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल प्रेम

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी भी वर्ष में कई वार पधार कर यहां निवास करते थे। आपका यह क्रम आपकी मृत्यु तक जारी रहा। (देखिये श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र 'सत्यदेव विद्यालंकार' लिखित पृष्ठ ३२४)

"संन्यासाश्रम में प्रवेश करने के बाद दिल्ली रहते हुए भी जब कभी विश्राम की आवश्यकता अनुभव होती तब महात्मा जी यहीं चले आते थे। उनको इस शाखा से कुछ विशेष प्रेम था। 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश' और 'आर्य समाज का इतिहास' लिखने का उपक्रम यहीं से बांधा गया था। एक यूरोपियन महिला ने आपको सौ

रुपये यह कह कर दिये थे कि आप यह रकम अपनी किसी प्रिय संस्था को देदें। आपने वे सौ रुपये इसी शाखा गुरुकुल को दिये थे।"

आपके इस प्रकार आगमनों तथा परामर्शों से कुल के कार्य कर्त्ताओं को बहुत सहायता मिलती रही और यह कुल दिन प्रतिदिन उन्नति करता गया।

गुरुकुल कांगड़ी में बाढ़

सितम्बर १६८० में गुरुकुल कांगड़ी में गंगा की भयंकर बाढ़ आई जिस समय यह समाचार गुरुकुल में पहुंचा सब ब्रह्मचारी तथा अध्यापक बहुत चिन्तित हुए। ब्रह्मचारियों ने १५ दिन तक भोजन में से घी तथा दूध का परित्याग करके तथा अध्यापकों ने अपनी वेतन में से कटौती कराके लगभग २००) गुरुकुल की सहायतार्थ इकट्ठा करके भेजा।

दयानंद जन्मशताब्दि महोत्सव

सं० १६८१ में शिवरात्री के अवसर पर मथुरा में दयानंद जन्म शताब्दि महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सभी ब्रह्मचारी तथा अध्यापक इस महोत्सव में सम्मिलित हुए। इस अवसर के ऐतिहासिक जलूस में ब्रह्मचारियों के भजनों ने समा बांध दिया था। ब्रह्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य तथा चमकते हुए चेहरों को देखकर सब उपस्थित महानुभावों पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र की उत्तम जलवायु का तथा प्रबंध का बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की शहादत

२३ दिसम्बर सन् १६२६ तदनुसार ४ पौष सं १६८३ को कुलपति श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी के एक मदांध मुसलमान द्वारा वध होनेका दुःखद समाचार जब कुल में पता लगा तो सब कुलवासी दुःखसागर में गोते लगाने लगे। गुरुकुल के मुख्याध्यापक जी उसी दिन देहली चले गये और अगले ही दिन गुरुकुल के सब बड़े ब्रह्मचारियों को भी तार द्वारा देहली बुलालिया। ब्रह्मचारियों ने श्री स्वामी जी के ऐतिहासिक अर्थी के

जलूस में भाग लिया और १-२ दिन वहां ठहरकर दुःखित मन से गुरुकुल लौट आये।

गुरुकुल का १३ वां वार्षिकोत्सव

सं १९८३ में गुरुकुल कांगड़ी का रजतजयन्ती महोत्सव मनाया जाने वाला था इसलिये गुरुकुल के अधिकारियों ने निश्चय किया कि इस वर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र का सालाना जलसा, जो सामान्यतया फरवरी मार्च में होता रहा है, दिसम्बर में किया जाय। गुरुकुल के मुख्याध्यापकजी ने नवम्बर मास में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को पत्र लिखा और उनसे दिसम्बर मासमें उत्सव करनेके लिये अनुमति मांगी और पधारनेकी स्वीकृति भी मांगी। इसपर उन्होंने उत्सव करने की स्वीकृति तो देदी पर दो तीन बार लिखने पर भी पधारने की स्वीकृति नहीं दी। वे इस उत्सव से पहले के सभी उत्सवों में सम्मिलित होते रहे थे। ऐसा मालूम होता है कि उन्हें अपनी मृत्यु की पूर्व सूचना मिल चुकी थी। पीछे से २३ दिसम्बर को श्री स्वामी जी का देहावसान हुआ और इसके तीन चार दिन बाद गुरुकुल का उत्सव मनाया गया। यह पहला उत्सव था जिस में स्वामी जी महाराज उपस्थित नहीं थे। स्वामी जी के बलिदान के कारण इस उत्सव में लोग बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। बलिदान के सम्बन्ध में उत्सव के समय विभाग में एक विशेष कार्यक्रम रक्खा गया था। इसके सभापति श्री पंडित इन्द्र जी थे।

गुरुकुल कांगड़ी की रजत जयन्ती

सं १९८३का गुरुकुल कांगड़ीका वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती महोत्सव के रूप में मनाया गया। इस उत्सव में गुरुकुल कांगड़ी की सब शाखायें सम्मिलित हुईं। यहां से भी सभी ब्रह्मचारी अपने अध्यापकों के साथ उत्सवमें सम्मिलित हुए। लोगोंने सब गुरुकुलों के ब्रह्मचारियोंके स्वास्थ्य के साथ तुलना में कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य बहुत उत्तम पाया

इस समय से गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपनी सर्वोत्तम जलवायु के लिए और भी मशहूर हो गया।

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जन्म से लेकर ही यह प्रथा थी कि नये बालकों का दाखला यहां के लिये भी गुरुकुल कांगड़ी में ही होता था, वहां जितने बालक प्रविष्ट होते उनमें से आधे या कुछ कम यहां भेज दिये जाया करते थे। सं०१६८२ तक यही व्यवस्था रही, पर सम्वत् १६८२ से गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० विश्वम्भरनाथ जी ने न जाने क्यों? यह प्रथा बदल डाली। इससे प्रारम्भ में बड़ी कठिनाई हुई। शाखा में प्रवेश का सिलसिला अबतक सर्वथा न होने से ब्रह्मचारियों की संख्या में कुछ कमी आने लगी। उस समय से लेकर नवीन ब्रह्मचारियों का दाखला यहां ही होता है।

अध्याय ४

परिवर्त्तन काल

(सं० १९८५ से १९८९)

गुरुकुल के प्रबन्ध में पुनः परिवर्त्तन

सं० १९८१ से लेकर १९८५ के आश्विनमास तक का समय गुरुकुल में बहुत शान्ति से तथा बिना किसी विशेष परिवर्तन के व्यतीत हुआ। सं० १९८५ के दीर्घावकाश के बाद श्री पं० सोमदत्त जी जो इस समय मुख्याध्यापक तथा प्रबन्ध कर्ता दोनों कार्य कर रहे थे त्यागपत्र देकर चले गये। त्याग पत्र देकर जाने के कतिपय अन्य कारणों के साथ २ यहभी एक सहायक कारण हुआ कि उनकी बहिन (धर्मपत्नी प्रो० इन्द्रजी) का स्वर्गवास होगया। १९-७-८५ को अपने स्थान पर पं० ईश्वरदत्त जी विद्यालङ्कार को मुख्याध्यापक तथा श्रीयुत पण्डित धर्मदेव जी बी० एस० सी० को प्रबन्ध कर्ता का कार्य सौंप कर वे देहली चले गये। २-३ महीने बाद गुरुकुल के मुख्याधिष्टाता तथा आचार्य श्री रामदेवजी ने पानीपत के श्री ला० ज्योतिप्रसाद जी को यहां का मुख्याधिष्ठाता

नियुक्त कर दिया। आप पानीपत में रहकर ही यहां के प्रबन्ध की देख रेख रखते थे। आपने लगभग ५-६ महीने बड़े उत्साह से काम किया। मुख्याध्यापक का काम श्री पं० ईश्वरदत्त जी करते रहे। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री आचार्य रामदेवजी ने अम्बाला छावनी के रविवर्मा स्टीलवर्क्स के मालिक ला० दीवानचन्द जी रिटायर्ड डिपुटी कलैक्टर महकमा नहर को यहां का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त कर दिया। आपने सं०१६८६ के प्रारम्भ से लेकर १६८८ तक अवैतनिक रूप से तथा बड़ी लगन से कार्य किया। आपके छोटे भाई रायसाहब ला० अमृतराय जी रिटायर्ड एक्जैक्टिव इंजीनियर भी धनसंग्रह आदि के काम में बड़ी सहायता करते रहे। शिक्षातथा ब्रह्मचारियों की देखरेख के लिये पहले स्नातक ईश्वरदत्त जो, बाद में कुछ समय मास्टर धर्मदेव जी, पं० हरिश्चन्द्रजी, मास्टर धर्मदेव जी बी० एस० सी०, मा० मुंशीरामजी एम० ए० पं० निरंजनदेव जी तथा मास्टर रुलियाराम जी एम० ए० क्रमशः मुख्याध्यापक का कार्य करते रहे। इस प्रकार तीन वर्ष में मुख्याध्यापक लगातार बदलते रहे।

गुरुकुल प्रबंधकर्तृ सभा

सं० १६७८ से पहले गुरुकुल के स्थानीय प्रबंध की देख रेख के लिये एक 'गुरुकुल सहायक सभा' बनी हुई थी। बाद में सं० १६७८ में श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने इस सभा को गुरुकुलके लिये अनुपयुक्त तथा हानिकारक समझ कर सभा को भंग कर दिया था और गुरुकुल का सब प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा के आधीन सीधा मुख्याधिष्ठाताजी गुरुकुल कांगड़ी के निरीक्षण में कर दिया था। सं० १६७८ से १६८५ तक यही व्यवस्था रही। सं० १६८५ में श्री पं० सोमदत्तजी के चले जानेपर पुनः प्रबन्धकर्तृ सभा बनानेका विचार पेश हुआ। १६८५ के सालाना जलसे के मौके पर स्थिर रूप से प्रबन्धकर्तृ सभा बनाने के लिये एक 'अनियमित सभा' बना दी गई। एक वर्ष बाद नियमित रूप

गु० कु० कुरुक्षेत्र के वर्तमान अध्यापक तथा अन्य ब्रह्मचारी ।

से 'प्रबन्धकर्तृ सभा' बना दी गई। इस सभा के प्रधान पहले श्री रायसाहब ला० अमृतरायजी, कुछ समय ला० गणपतरायजी तथा बादमें पं० हीरालाल जी एस. डी. ओ. बव्याल निवासी रहे। इसी प्रकार मंत्री भी पहले डाक्टर लालचन्दजी अम्बाला तथा बादमें बा० गणपतराय जी वकील करनाल तथा बा० बनवारीलाल जी रहे। डा० लालचन्द जी अम्बाला वाले बहुधा गुरुकुल आते रहे और प्रबन्धकार्य में बहुत सहयोग देते दिलाते रहे। गुरुकुल की धन द्वारा भी आप बहुत सहायता करते तथा कराते रहे। इन उपर्युक्त महानुभावों के अलावा श्री बा० गणपतराय जी प्रधान आर्यसमाज कैथल, ला० दुर्गाप्रसाद जी शाहाबाद, ला० नरसिंहदास जी तरावड़ी, ला० शाकुम्भरीदास जी रादौर ला० बुलाकीदास जी अम्बाला इत्यादि सज्जन भी प्रबन्धर्तृ सभा में प्रमुख भाग लेते रहे। सभा के प्रधान अधिक समय तक राय साहिब ला० अमृतराय जी ही रहे। आपने कुल की उन्नति के लिये सब प्रकार से प्रयत्न किया। इस समय कुल में प्रबन्धकार्य में जो उन्नति हुई उसका श्रेय आपको तथा आपके भाई दीवानचन्द जी को है।

प्रबन्धकर्तृ सभा के कार्य पर एक दृष्टि

जिस समय प्रबन्धकर्तृ सभा का निर्माण किया गया था तब आशा की गई थी कि यह सभा गुरुकुल के प्रबन्ध में सहायता के साथ २ इसकी आर्थिक कठिनाई को भी हल करेगी। पर दुर्भाग्य से कुछ समय बाद ही सभा में आन्तरिक कलह तथा विद्वेष की भावना फैल गई। सभा के सदस्यों तथा अधिकारियों के पारस्परिक झगड़ों का प्रभाव गुरुकुल के कर्मचारियों पर भी पड़े बिना नहीं रहा। अध्यापकों में भी दलबन्दी प्रारम्भ हो गई। ब्रह्मचारियों पर भी इसका असर अवश्य पड़ा। दो तीन साल के छोटे से समय में मुख्याध्यापकों का लगातार बदलते रहना भी इसी की सूचना देता है। अध्यापकों में भी लगातार परिवर्तन होते रहे। इस सब गड़बड़ी का परिणाम यह हुआ कि ब्रह्मचारियों की संख्या जहां पहले १९८५ में १४५ थी घटते घटते पीछे से सिर्फ ६२ रह

गई। आर्थिक अवस्था भी पूर्वापेक्षया बहुत शोचनीय होगई। जैसी आशा की गई थी इसके विपरीत (श्री रायसाहब ला०अमृतरायजी, डा०लालचंद जी आदि कुछ महानुभावों को छोड़कर) प्रबन्धतृ सभा का कोई सदस्य धन संग्रह के कार्य में सहयोग न दे सका। रायसाहब ला० अमृतरायजी बहुधा गुरुकुलार्थ धन संग्रह करनेके लिये जाते रहे। आप अपने पुरुषार्थ से पर्याप्त धन एकत्रित करके लाते रहे। इस धन से आपने गुरुकुल की जमीनों में कूप लगाकर गुरुकुल को स्वावलम्बी बनाने की योजना को सफल बनाने का यत्न किया।

सभा की दलबन्दी तथा झगड़ों के परिणामस्वरूप श्री डिपुटी दीवानचंद जी सं० १६८८ में कार्य परित्याग करके चले गये। सभा ने श्री ला० वनवारीलालजी को आपके स्थान पर प्रबन्धकर्त्ता नियत किया। आप ३-४ मास तक अवैतनिक रूप में तथा बाद में वेतन लेकर १४-८-६० तक कार्य करते रहे। इस समय में प्रबंध सम्बन्धी अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गई थी।

पं० सोमदत्त जी दुबारा गुरुकुल में

गुरुकुल में इस गड़बड़ी को दूर करने के लिये प्रबंधकर्तृ सभा के अधिकारियों, गुरुकुल के संरक्षकों तथा गुरुकुल प्रेमियों का ध्यान पुनः श्री पं० सोमदत्त जी को बुलाने की ओर गया।

श्री आचार्य रामदेवजी गुरुकुल कांगड़ी की आज्ञासे श्री पं० सोमदत्त जी ६-६-८८ को पुनः गुरुकुल में पधार गये। आप पहले भी ५-६ वर्ष तक गुरुकुल में मुख्याध्यापक तथा प्रबंधकर्त्ता का कार्य बड़ी योग्यता-पूर्वक कर चुके थे। इस समय आप मुख्याध्यापक नियुक्त होकर कार्य करने लगे। प्रबंधकर्त्ता का कार्य ला० बनवारीलाल जी कर रहे थे। आप वैतनिक रूप से प्रबंधकर्त्ता का कार्य येन केन प्रकारेण चला रहे थे।

अध्याय ५

वर्तमान काल

(सं १९९० से १९९३)

प्रबन्धकर्तृ सभा का अन्त

पिछले अध्याय में लिखा जा चुका है कि प्रबन्धकर्तृ सभा के आन्तरिक कलह का गुरुकुल पर शोचनीय प्रभाव पड़ा। सं० १९९० के अन्त पर यह सभा दलबन्दी तथा आन्तरिक कलह के परिणाम स्वरूप स्वयं भंग होगई। तब से इस गुरुकुल का सब प्रबन्ध सं० १९७८ से १९८५ के वर्षों की तरह सीधा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन श्री मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी के निरीक्षण में कर दिया गया लाο बनवारी लाल जी १४-८-९० तक प्रबन्ध कर्ता का कार्य चलाते रहे। पीछे से प्रवन्ध कर्तृ सभा ने प्रबन्ध का कार्य श्री ला० ठाकुरदास जी वानप्रस्थी के हाथ में सौंप दिया। आपने २ साल तक बड़ी योग्यता के साथ अवैतनिक रूपसे कार्य सम्पादन किया। बाद में योग साधन की इच्छा से आप त्यागपत्र देकर चलेगये। आपके चले जाने पर प्रबन्ध कर्ता का कार्यभी श्री पं० सोमदत्त जी के सुपुर्द कर दिया गया।

सं० १९९२ के प्रारंभ से आपही मुख्याध्यापक तथा प्रबन्धकर्ता का कार्य कर रहे हैं।

गुरुकुल की वर्तमान अवस्था

सं० १९८५ से लेकर १९८९ तक का काल गुरुकुल के लिये अशान्ति तथा अव्यवस्था का काल था। गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध में लगातार परिवर्तन का असर गुरुकुल के हक में अच्छा नहीं हुआ। इसका जो परिणाम होना था वही हुआ। ब्रह्मचारियों की संख्या घटते घटते ६२ तक रह गई थी। आर्थिक अवस्था भी बहुत शोचनीय हो गई थी।

वर्तमान काल (सं० १९९०) से गुरुकुल के फिर अच्छे दिनों का प्रारंभ हुआ। गुरुकुल ने अपनी पुरानी प्रसिद्धि को फिर प्राप्त कर लिया है। ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़कर अब १०० के लगभग होचुकी है। गुरुकुल में सर्वथा शान्ति का वायुमंडल है। गुरुकुल के अधिकारी तथा कर्मचारी कंधे से कंधा भिड़ाकर गुरुकुल की अवस्था को उन्नत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। आर्थिक अवस्था भी पूर्वापेक्षया बहुत अच्छी है। गुरुकुल में जो भी महानुभाव निरीक्षण करने तथा अव-लोकन करने आते हैं गुरुकुलीय प्रबन्ध तथा व्यवस्था से परम सन्तोष प्रगट करके जाते हैं। गुरुकुल के आचार्य श्री पं० देवशर्मा जी तथा मुख्याधिष्ठाता श्री पं० सत्यव्रत जी वर्ष में बहुधा गुरुकुल में पधार कर कार्य का निरीक्षण करते रहते हैं तथा अपने बहुमूल्य परामर्शों से कुल को लाभ पहुँचाते हैं।

गुरुकुल के अध्यापकों में अधिकतर गुरुकुलों के सुयोग्य स्नातक तथा सरकारी विश्वविद्यालय के ट्रेण्ड शिक्षक हैं। सभी कार्यकर्ता पारस्परिक सहयोग तथा प्रेम से कुलकी उन्नति में लगे हुए हैं। किसी प्रकार की दलबंदी तथा झगड़े बाजी नहीं है।

गतवर्ष से ब्रह्मचारियों को Scouting (बालचर) शिक्षण देना भी प्रारंभ कर दिया है। ब्रह्मचारी इसमें पर्याप्त दिलचस्पी लेरहे हैं।

गु० कु० कुरुक्षेत्र का मुख्यद्वार

मुख्यद्वार के ऊपर का कमरा स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने निवासार्थ बनवाया था।

यदि दयामय भगवान की कृपा से गुरुकुल के अधिकारियों स्नातकों संरक्षकों अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों में यही सद्भाव काम करता रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब यह गुरुकुल ;पूर्वापेक्षया भी बहुत उन्नत अवस्था को प्राप्त कर लेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्णजयन्ती

सं० १९९३ में ईस्टर होलिडेज़ के दिनों में लाहौर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाया गया इस अवसर पर गुरुकुल के मध्यविभाग के सब ब्रह्मचारी तथा कतिपय अध्यापक भी इस महोत्सव में सम्मिलित हुए। महोत्सव के पंडाल को सजाने का काम हमारे ब्रह्मचारियों को सौंपा गया था। इसके अलावा ब्रह्मचारियों के भजन भी होते रहे। तीसरे दिन रातके समय पंडाल में ब्रह्मचारियों के लाठी लेज़म तलवार, बनैटी, ग्रुपमेकिंग आदि के आश्चर्यजनक खेल हुए। छोटे २ ब्रह्मचारियों के इन आश्चर्यजनक खेलों को देखकर लोग बहुत प्रभावित हुए। नगर कीर्तन में भी गुरुकुलमंडली की शोभा देखते ही बनती थी। ब्रह्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य की चर्चा जगह २ हो रही थी।

गुरुकुल की वर्तमान अवस्था पर कुछ सम्मतियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से सब शाखा गुरुकुलों के निरीक्षक श्री मा० गोपाल जी बी० ए० निरीक्षण कर लिखते हैं:—

"ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य बहुत उत्तम है, ६४ ब्रह्मचारियों में से केवल एक रोगी था। जिस से प्रतीत होता है कि यहां का जलवायु अत्युत्तम है। ब्रह्मचारियों के संध्या हवन में मैं तीनों दिन सम्मिलित होता रहा। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि यहां पर संध्या हवन का तरीका शेष सब शाखाओं के तरीके से अधिक उत्तम है। व्यायाम भी विद्यार्थी नियम पूर्वक करते हैं। अधिष्ठाता महोदय बड़ी लगन से काम करते हैं। भोजन उत्तम है, दूध और घी विशेषतया अच्छा है और पर्याप्त सस्ता है।"

"गत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष गुरुकुल उन्नत प्रतीत होता है। ब्रह्मचारियों की संख्या भी बढ़ी हुई है। मैं पं० सोमदत्त जी को बधाई देता हूँ कि उसके पुनः आजाने से गुरुकुल की अवस्था फिर उन्नत होरही है। और मुझे विश्वास है कि यदि इस प्रकार कार्य चलता रहा तो थोड़े काल में ही गुरुकुल अपनी पुरानी कीर्ति को प्राप्त कर लेगा।"

१–६–३२.

गुरुकुल विद्या सभा की ओर से सब शाखा गुरुकुलोंके निरीक्षक श्री ला० हरदयाल जी एम०ए० रिटायर्ड इन्स्पेक्टर आव स्कूल्स लिखते हैं–

"मैं दो वार इस संस्था का निरीक्षण करके यह बात दावे के साथ तथा पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह स्थान गुरुकुल के लिये एक आदर्श स्थान है। यह गुरुकुल अब फिर बहुत लोकप्रिय हो रहा है। एक आदमी के हाथ में दो आदमियों का काम होना क्या मायने रखता है इसे मैं खूब समझता हूँ। और उस कार्य को कुशलता पूर्वक निबाहना बहुत थोड़े मनुष्यों में दृष्टि-गोचर होता है, परन्तु इस संस्था के कई वार अच्छी तरह निरीक्षण करने के पश्चात् मैंने पं० सोमदत्त जी में यह दुर्लभ गुण पाया है। मैं इस कार्य को कुशलता-पूर्वक संपादन करने के लिये पंडितजी को बहुत हार्दिक बधाई देता हूँ।

अपनी अगली निरीक्षण रिपोर्ट में वे लिखते हैं:—

"मैं तीन दिन से इस गुरुकुल के निरीक्षण के लिये आया हुआ हूँ। मैंने ब्रह्मचारियों को पढ़ाई में, खेल में, संध्या हवन में और उनके सोने के कमरों में देखा है। श्री आचार्य सोमदत्त जैसे लगन वाले और मेहनती पुरुष कम ही देखने में आते हैं। जिधर देखो उस मेहनत का फल दिखाई देता है। बाग देखो तो वह लहलहाता, फलों से भरा हुआ, गौशाला में दूध की बहुतायत है कि ब्रह्मचारी पी भी नहीं सकते। इन्हीं कारणों से यह गुरुकुल सर्वप्रिय होता जा रहा है।"

५-१०-३६

ओ३म्

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ज़िला करनाल

का

२६ वर्षीय वृत्तान्त
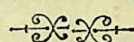
गुरुकुल का उद्देश्य

किसी कवि ने मनुष्य जीवन की विशेषता बतलाते हुए कहा है कि "खाना पीना सोना आदि ये बातें पशुओं में भी मनुष्य की तरह होती हैं, धर्म ही एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्य में ही पाई जाती है, पर जिस मनुष्य में यह धर्म न हो वह निरा पशु ही है।"

शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को धर्म और अधर्म का ज्ञान हो सकता है। पर वह शिक्षा भी उत्तम शिक्षा होनी चाहिए। अन्यथा वह अधर्म के मार्ग पर ही ले जाने वाली होती है। जिस शिक्षा से मनुष्य धर्म और अधर्म को न पहचान सके वह व्यर्थ है। उत्तम शिक्षा ग्रहण करने से ही मनुष्य का आचरण उत्तम होता है। विद्वान् और सदाचारी मनुष्य ही देवता कहलाते हैं। यदि कोई मनुष्य पूर्ण विद्वान् होने पर भी सदाचार से रहित है तो वह राक्षस कहलाता है। राम और रावण में यही भेद था। रावण पूर्ण विद्वान् होने पर भी सदाचार से रहित

होने के कारण राक्षस कहलाया। यह कुशिक्षा का ही फल था। किसी कवि ने क्या ही ठीक कहा है "साक्षरा: विपरीततां गता: राक्षसा: भवन्ति" पंडित विद्वान् लोग ही कुमार्ग पर चलने से राक्षस हो जाते हैं। साक्षरा: उलटा करने से राक्षसा: पढ़ा जाताहै। इसलिये मनुष्य जीवन के लिये शिक्षा आवश्यक है। और शिक्षा वही उत्तम है जो मनुष्य को सदाचारी तथा धर्मात्मा बनावे।

वर्तमान समय में यद्यपि देश में हज़ारों शिक्षणालय हैं। पर उन में जो शिक्षा दी जाती है वह बहुत दूषित है। उस शिक्षा से शिक्षित होकर भी मनुष्य पशु ही बना रहता है बल्कि कई अंशों में पशुओं से भी अधिक बुरा हो जाता है। इसके कई कारण हैं।

१—सरकारी शिक्षणालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी शिक्षा के उद्देश्य को भली प्रकार नहीं समझते। वे पेट के लिये रोटी कमाना ही एक मात्र शिक्षा का उद्देश्य समझते हैं। पर शिक्षा का उद्देश्य यह नहीं है। किसी ने ठीक कहा है कि "If wealth is lost nothing is lost, if health is lost something is lost, if character is lost every thing is lost." पर सरकारी शिक्षा में पलने वाले विद्यार्थी आचरण तथा स्वास्थ्य की परवाह न करके धन के ही पीछे पड़े रहते हैं।

२—धार्मिक तथा सदाचार सिखलाने वाली शिक्षा का सर्वदा अभाव होनेसे विद्यार्थियोंको जहां अपने धर्म तथा धर्म पुस्तकोंका सर्वथा ज्ञान नहीं होता—वहां उसका आचरण पशुओं से भी बुरा हो जाता है।

३—साथ ही गुरू का शिष्य के साथ उचित सम्बन्ध न होने से शिक्षक शिष्य पर पूरी तरह से अपना असर नहीं डाल सकता। शहरों के गंदे वातावरण का बालकों के कोमल हृदय पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ब्रह्मचर्य काल में जहां बालकों का जीवन सादा तथा तपस्वी होना चाहिये वहां उनका जीवन भोग और विलासिता का क्षेत्र बन जाता है।

४—ब्रह्मचर्य की तरफ सर्वथा ध्यान न होने से बालकों की जीवन कलिका अधखिली अवस्था में ही मुरझा जाती है।

५—सरकारी शिक्षणालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी तथा उर्दू होने से तथा साथ ही उत्तम धार्मिक शिक्षा न होने के कारण विद्यार्थी अपनी मातृभाषा मातृसभ्यता तथा मातृ संस्कृति को भूल जाते हैं और मातृ भूमि के प्रति उनका अनुराग कम हो जाता है। वे परतंत्रता को ही उत्तम समझने लगते हैं।

इन्हीं दोषों को दूर करने के लिये गुरुकुलकी स्थापना की गई है। गुरुकुल स्थापना के गौण तथा मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

१—ब्रह्मचर्य की रक्षा २—उत्तम शिक्षा तथा सदाचार शिक्षा द्वारा धर्मात्मा तथा सच्चे अर्थों में वैदिक धर्मी विद्वान् पैदा करना। ३—वैदिक वर्ण व्यवस्था का पुनर्जीवन ४—मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना ५—'सादा जीवन तथा उच्च विचार' की पुरानी प्रथा का प्रचार करके, प्राचीन आर्य वैदिक सभ्यता का प्रचार करना :—६ गुरु तथा शिष्य के सनातन सम्बन्ध को फिर से स्थापित करना।

इन्हीं उपरोक्त उद्देश्यों को लक्ष्य में रखकर आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने गुरुकुलों की स्थापना की भविष्य कल्पना अपने सत्यार्थ प्रकाश में की थी और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये गुरुकुल खोला गया है।

१. गुरुकुल का स्थान

देहली कालका लाइनपर कुरुक्षेत्र जंकशन नाम का एक रेलवे स्टेशन है। इससे पहोवा तीर्थ को पक्की सड़क जाती है। इस सड़क की बांई तरफ कुरुक्षेत्र तीर्थ से १ मील दूर सुरम्य जंगल के बीच में यह गुरुकुल स्थापित है। गुरुकुल से पूर्व की तरफ भारत प्रसिद्ध तालाब है जिसमें सूर्य ग्रहण के अवसर पर लाखों नर नारी स्नानार्थ दूर २ से आते हैं। चारों तरफ अतीत स्मृति को जागृत करने वाले, भारत के प्राचीन

इतिहास का स्मरण कराने वाले, भीष्म शरशय्या, वाणगंगा, कर्ण का खेड़ा, अभिमन्यु का चकाबू (चक्रव्यूह) आदि पवित्र चिन्ह अब भी विद्यमान हैं। पास ही वह पवित्र स्थान है, जहां खड़े होकर श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता का परम पावन उपदेश दिया था। ऐसी रम्य तथा प्रभाव जनक परिस्थिति में यह गुरुकुल स्थापित है।

२. गुरुकुल भवन

ई० १६६६ में जब गुरुकुल का प्रारम्भ हुआ था उस समय एक कमरे से प्रारम्भ होने वाले इस गुरुकुल में सम्प्रति लगभग ११००००) एक लाख दस हज़ार रुपये की लागत के पक्के मकान बने हैं। लगभग १५० ब्रह्मचारियों की शिक्षा तथा रहने के लिये पर्याप्त आश्रम तथा विद्यालय के कमरे, यज्ञशाला, स्नानगृह, चिकित्सालय, भोजनशाला, वस्तुभंडार, परिवारगृह, गोशाला, धर्मशाला, स्त्री स्नानगृह, अतिथिभवन आदि ज़रूरी इमारतें पक्की तथा सुन्दर बनी हैं।

३. जायदाद

गुरुकुल के पास अपनी लगभग २२०० बीघा ज़मीन है। ६०० बीघे के लगभग जमीन जिसमें ४ कूए लगे हैं कंथल ग्राम में है। ६०० बीघेके लगभग जमीन जिसमें ३ कूए लगे हैं दयालपुर ग्राममें है। २५० बीघे के लगभग जमीन कैथल से ७ मील दूर अटैला ग्राम में है। १२५ बीघे के लगभग जमीन पानीपत से लगभग ११ मील दूर नायन में है इसके अलावा लगभग ४०० बीघा जमीन गुरुकुल भूमि में, तथा गूढा मसाना, मोढ़ी आदि स्थानों पर है। इन सब जमीनों में लगभग १४ कूए लगे हैं। इस जायदादसे गुरुकुल को पर्याप्त आय होती है। गुरुकुल के शुभचिन्तक ला० साकुम्भरीदास जीने अभी हालमें अपनी मृत्युके समय मोढ़ी के पास लगभग ५०बीघा जमीन जिसका आनुमानिक मूल्य १५००) है गुरुकुल को दान दी है।

इस जायदाद की देख रेख का काम श्री ला० हुकमचन्दजी रिटायर्ड कानूनगो जो सर्वथा अवैतनिक रूप से सेवा कर रहे हैं करते हैं।
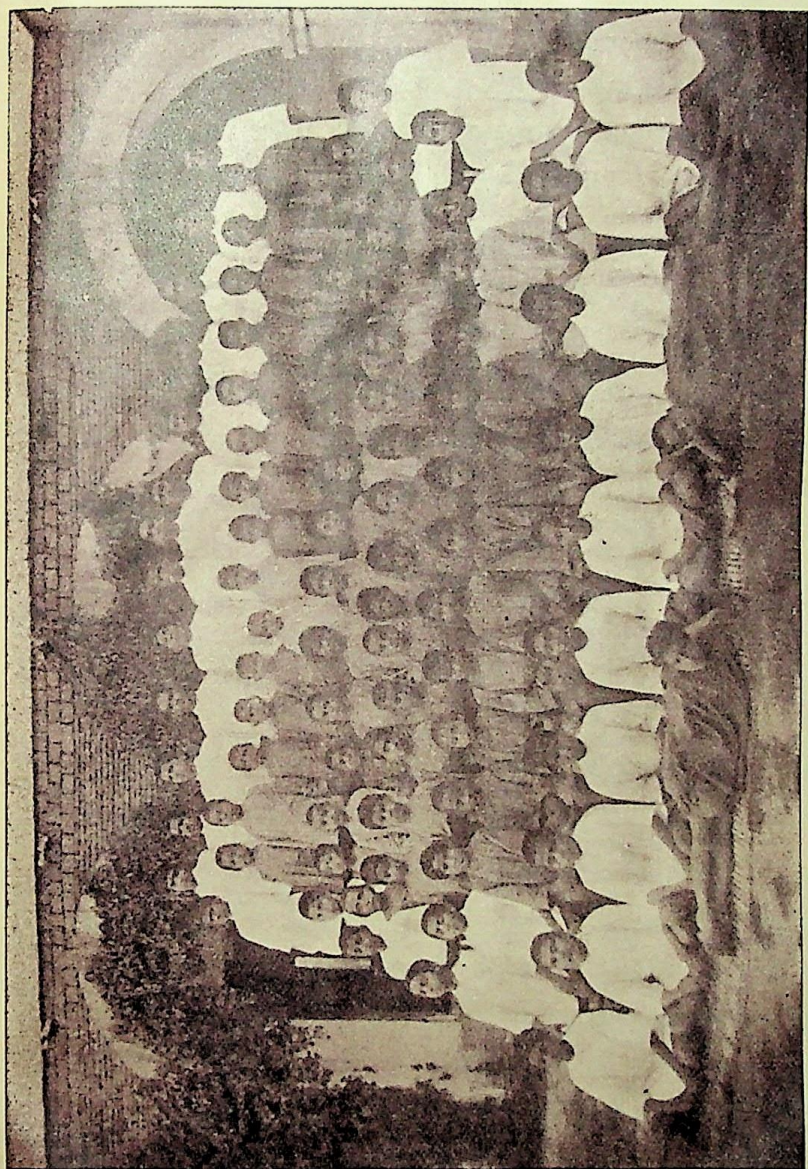
गु० कु० कुरुक्षेत्र के वर्तमान ब्रह्मचारी

४ गुरुकुल का आन्तरिक प्रबन्ध।

गुरुकुल के प्रारम्भ से लेकर इस समय तक जो परिवर्त्तन होते रहे हैं उनका वर्णन प्रारम्भिक इतिहास में दे दिया गया है। सम्प्रति इस गुरुकुल का सब प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के आधीन प्रो० सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी तथा श्री पं० देवशर्मा जी आचार्य के निरीक्षण में श्री पं० सोमदत्तजी विद्यालंकार कर रहे हैं। आप आचार्य तथा स० मुख्याधिष्ठाता दोनोंका कार्य कर रहे हैं। आपके साथ भिन्न २ विभागोंमें भिन्न २ महाशय सहायक प्रबन्धकर्त्ता का कार्य करते हैं। वे निम्न लिखित हैं:—

१—कार्यालयाध्यक्ष : म० श्रद्धाराम जी कोषाध्यक्ष
२—जायदाद : ला० हुकम चन्द जी रिटायर्ड कानूगो
३—भण्डार : म० जियालाल जी
४—गोशाला : म० धर्मसिंह जी
५—वाटिकाध्यक्ष : म० कन्हैय्यालाल जी
६—चिकित्सालय : डा० आत्मानन्दजी आयुर्वेदालंकार

५. शिक्षा तथा विद्यालय।

विद्यालय में ८ कमरे ८ श्रेणियों के पढ़ने के लिये, १ पुस्तकालय भवन तथा एक विज्ञान और एक आलेख्य भवन हैं। विज्ञानभवन में लगभग २०००) के मूल्य के उपकरण हैं। पुस्तकालय में संम्प्रति १८०० के लगभग विविध भाषा तथा विषयों की पुस्तकें हैं। इनमें से अधिकतर पुस्तकें महात्मा मुन्शीराम जी ने प्रारंभ में गुरुकुल कांगड़ी से भिजवाई थीं। गुरुकुल के प्रारंभ से जो २ महानुभाव मुख्याध्यापक का कार्य करते रहे हैं उनका वर्णन प्रारम्भिक इतिहास में दे दिया गया है। १ वैशाख १९९४ को निम्न महानुभाव अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

१. श्री पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार मुख्याध्यापक
२. ,, ,, ईश्वरदत्त जी शास्त्री सिद्धान्तालंकार संस्कृताध्यापक

३. ,, ,, सत्यभूषणजी विद्यालंकार ,,
४. ,, ,, रघुवीर जी शास्त्री विद्यानिधि ,,
५. ,, ,, विष्णुमित्रजी ,,
६. ,, मा० राजबलजी बी० ए० आंग्लभाषाध्यापक
७. ,, ,, कौशलचन्द्र जी गणिताध्यापक
८. ,, पं० विक्रमादित्य जी सँस्कृत तथा व्यायाम शिक्षक
९. ,, मा० पूर्णचन्द्रजी आलेख्याध्यापक
१०. ,, पं० आत्मानन्द जी आयुर्वेदालङ्कार

इन महानुभावोंके अतिरिक्त निम्न भी पहले गुरुकुलके आरंभसे अब तक गुरुकुल में बड़ी लगन तथा योग्यतासे अध्यापन कार्य करते रहे हैं।

१. मा० हरिगोपालजी बी० ए० बी० टी० २. पं० भगीरथजी शास्त्री ३. मा० चिरंजीलालजी ४.पं०सुरेन्द्रजी विद्यालंकार ५. पं० शान्तिस्वरूप जी वेदालंकार ६. मा० रणजीत राय जी ७. पं० राजेन्द्रजी विद्यालङ्कार ८. पं० शशिभूषण जी विद्यालङ्कार ९. पं० रामचन्द्रजी विद्यालङ्कार १०. पं० कैलाशचन्द्रजी ११. मा० धर्मदेवजी बी० एस० सी० १२. पं० जगदीशजी विद्यालङ्कार १३. पं० प्रकाशचन्दजी वेदालङ्कार १४. रघुवीरसिंह जी बी० ए० १५. पं० प्रभुदयाल जी १६. पं० वेदव्रत जी वेदालङ्कार १७. मा० रुलिया राम जी एम० ए० १८. पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालङ्कार १९. मा० त्रिलोकीनाथ जी एम० ए० २०. मा० डालचन्द्र जी एम० ए० एल० एल० बी०, २१. पं० रामदयाल जी शास्त्री।

इन महानुभावों की अमूल्य सेवाओं के लिये गुरुकुल कृतज्ञ रहेगा।

६ गुरुकुल में क्या २ पढ़ाया जाता है

१:—इस गुरुकुल में ८ श्रेणी तक ही शिक्षा का प्रबन्ध है। ८ म के बाद ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगड़ी चले जाते हैं। पाठ-विधि वही है जो गुरुकुल कांगड़ी की है।

२:—ब्रह्मचारियों को १:—अंग्रेजी २:—गणित ३:—भूगोल ४:—इतिहास ५:—विज्ञान ६:—आलेख्य (ड्राइंग) आदि सब विषय उसी स्टैंडर्ड तक पढ़ाये जाते हैं जिस स्टैंडर्ड तक पंजाब यूनिवर्सिटीसे सम्बद्धस्कूलों में पढ़ाये जाते हैं।

३:—इसके अलावा संस्कृत साहित्य, संस्कृत व्याकरण, धर्मशिक्षा और आर्य भाषा (हिन्दी) विशेष रूपसे पढ़ाये जाते हैं। ८ म तक पढ़ने के बाद ब्रह्मचारी संस्कृत में इतने योग्य हो जाते हैं कि वे बनारस की 'मध्यमा' तथा पंजाब यूनिवर्सिटी की 'विशारद' परीक्षा दे सकते हैं। आर्यभाषा (हिन्दी) में इतने योग्य हो जाते हैं कि जरा से प्रयत्नसे पंजाब यूनिवर्सिटी की हिन्दी परीक्षा (हिन्दी भूषण) दे सकते हैं। (अभी दो वर्ष पहिले गुरुकुल की ८ म श्रेणी से गया हुआ ब्रह्मचारी पंजाब की हिन्दी भूषण परीक्षा में सारी यूनिवर्सिटी में २य नम्बर रहा था)। धर्मशिक्षा गुरुकुल की एक बड़ी विशेषता है।

इस प्रकार गुरुकुल में ८ म तक पढ़ने के बाद ब्रह्मचारी—

१:—अंग्रेजी, गणित, साइन्स, इतिहास, भूगोल, ड्राइंग आदि विषयों में मिडिल तक की योग्यता के,

२:—संस्कृत में बनारस की मध्यमा अथवा पंजाब की विशारद की योग्यता के।

३:—और आर्यभाषा (हिन्दी) में पंजाब की भूषण परीक्षाकी योग्यता के हो जाते है।

शारीरिक व्यायाम की विशेषता:—

पढ़ाई के अलावा ब्रह्मचारियों को १:—लाठी चलाना २:—तलवार ३:—लेजम का व्यायाम ४ मोंगली का व्यायाम :—जिम्नास्टिक व ग्रुप मेकिंग के व्यायाम ६:—बनैटी, भाला, गदका चलाना वगैरह का भी अभ्यास कराया जाता है। इस शिक्षा के लिये एक योग्य शिक्षक नियुक्त हैं जो धनुर्विद्या (तीरंदाजी) में बड़े योग्य हैं।

व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा:—

१:—प्रत्येक बृहस्पतिवार को गुरुकुल में आर्यसमाज होती है जिसमें योग्य महानुभावों के व्याख्यान होते हैं २:—प्रत्येक शुक्रवार की रात को ब्रह्मचारी राष्ट्रीय ध्वजा का अभिवादन करते हैं तथा प्रति दिन आध घन्टा राष्ट्र के लिये श्रम अथवा तकली चरखा चलाते हैं।

३:—प्रत्येक शनिवार की रात को सभा होती है जिसमें ब्रह्मचारी संस्कृत तथा हिन्दी में व्याख्यान देने का अभ्यास करते हैं। ४:—समय २ पर योग्य महानुभावों को निमंत्रित कर विशेष रूप से व्याख्यान कराये जाते हैं।

७ चिकित्सालय

आश्रम के पश्चिम की तरफ़ २०००) की लागत से स्वर्गीय लाला नौबतरायजी की यादगार में बना है। इसकी आधार शिला ६-४-२५ को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कर कमलों से रखवाई गई थी। तथा उद्घाटन श्री कुँवर रणंजयसिंह जी एम०एल०ए०के हाथों- ३०-३२ को वार्षिकोत्सवके अवसर पर कराया गया था श्री ला० दीवानचन्दजी ने अपने मुख्याधिष्ठातृत्व में यह चिकित्सालय सन् १९३० ई. में विविध दानियों से प्राप्त लगभग २०००) की लागत से बनवाया था। इसके पास एक कूप आपने अपनी धर्मपत्नी की यादगार में लगभग १०००) की लागत से निज व्यय से बनवाया था।

इस गुरुकुल का जलवायु बहुत उत्तम है। यहां बहुत थोड़े ब्रह्मचारी बीमार होते हैं। तथापि एक योग्य चिकित्सक दिन रात गुरुकुल में रहते हैं। आस पास के ग्रामों से हज़ारों की तादाद में ग्रामीण भाई दवा लेने आते हैं जिन्हें बिना मूल्य दवाई दी जाती है। गुरुकुल के प्रारंभिक एक वर्ष बाद से श्री डाक्टर शिवराज जी गुरुकुल में चिकित्सक का काम करते हैं। आप बड़ी योग्यता तथा लगन से इस कार्य को करते रहे हैं। सं० ९१ से आपने थानेसर शहर में प्रेक्टिस प्रारम्भ करदी है तथापि आप रहते गुरुकुल में ही हैं और अब भी सदा अवैतनिक रूपसे गुरुकुल की सेवा करते रहते हैं। प्रबन्धकार्यमें भी आपसे बड़ी सहायता मिलती रहती है। सं० ९१ में स्नातक देव कीर्तिजी आयुर्वेदालंकार तथा सं० ९२ में श्री० स्नातक भद्रसेनजी आयुर्वेदालंकार गुरुकुल में चिकित्साकार्य करते रहे। दोनों महानुभावों ने बड़ी योग्यता से तथा लगन के साथ काम किया। इन दोनों महानुभावों ने

निर्वाहार्थ न्यूनतम वेतन लेकर एक २ साल की ही सेवा दी थीं। इसके बाद डाक्टर मुकन्दलाल जी रिटायर्ड ने कुछ दिन काम किया। संप्रति इसी गुरुकुल से पढ़कर स्नातक हुए स्नातक आत्मानन्द जी आयुर्वेदालङ्कार गुरुकुल में चिकित्सा का कार्य कर रहे हैं। इस चिकित्सालय का संपूर्ण वार्षिक व्यय लगभग १०००) वार्षिक है। अम्बाला छावनी के सुयोग्य डाक्टर लालचन्द जी पिछले ७—८ वर्षों से हैल्थ आफिसर का काम करते हैं। आप समय २ पर यहां पधार कर विशेष रूप से ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य तथा सफाई का निरीक्षण करते रहे।

आपके अलावा थानेसर के सरकारी हस्पताल के डा० दीवानचन्द जी, शाहाबाद के सरकारी हस्पताल के डा. रामरखामल जी, अम्बाला छावनी के डा. मिलखीराम जी, तथा मेजर गुरदासराम जी आदि योग्य डाक्टर भी, जब भी कभी याद किया गया गुरुकुल में पधार कर सेवा करते रहे। इस सेवा के लिये इन महानुभावों का बहुत २ धन्यवाद है।

८ भोजन भण्डार

भोजन भण्डार में २ पाचक तथा ३ कहार काम करते हैं। भण्डारी का काम गतवर्ष म. जियालालजी बड़ी लगन से करते रहे। ब्रह्मचारियों को दो समय भोजन तथा दो समय लघ्वाहार दिया जाता है। भोजन भण्डार की सब इमारत लगभग ८०००) मूल्य की बड़ी सुन्दर बनी है। म. रामजीदास जी भण्डारी कई साल तक निःस्वार्थ भाव से भण्डारी का काम करते रहे। बाद में आपने संन्यास ले लिया।

९ कार्यालय

कार्यालयाध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष का काम गुरुकुल के पुराने सेवक म. श्रद्धाराम जी बड़ी योग्यता तथा लगन से सं० १९७९ ई० से कर रहे हैं कार्यालय का काम आपके हाथों में बहुत सुरक्षित है।

इस काम के अलावा प्रबन्धकार्य में भी आपसे बड़ी सहायता मिलती रहती है। कार्यालय के सब हिसाब का कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रतिमास निरीक्षण होता है।

१० गोशाला तथा पशुशाला

ब्रह्मचारियों को ताज़ा तथा शुद्ध दूध देने के लिये गुरुकुलकी अपनी गोशाला है। इस में लगभग ८० पशु हैं जिनसे ब्रह्मचारियों के लिये पर्याप्त सब दूध उपलब्ध होजाता है। कृषि आदि का काम करने के लिये ६ जोड़ी बैल हैं। इस गौशाला पर वर्ष में लगभग १८००) व्यय तथा २०००) आय होती है। सम्प्रति इस का प्रबन्ध स्वामी श्रद्धानन्द जी के सेवक म० धर्मसिंह जी बड़े उत्साह से कर रहे हैं। आपके अलावा ५ पशु सेवक और हैं।

११ गुरुकुल वाटिका

इस गुरुकुल की अपनी लगभग ८० बीघा की बगीची है। इससे काफ़ी मात्रा में ताज़ी सब्ज़ी प्राप्त होजाती है। और ब्रह्मचारियों की जरूरत से ज्यादा बची हुई सब्ज़ी बेच दी जाती है। शाक सब्ज़ीके अलावा सन्तरा, मालटा, आम, अमरूद, केला अंजीर, आडू, अङ्गूर, अनार, नासपाती, छोटा सेव आदि फलों के भी बहुत से वृक्ष हैं जिनसे पर्याप्त मात्रा में फल ब्रह्मचारियों को मिलते रहते हैं गन्ना तथा पौंडा भी पर्याप्त मात्रा में बोया जाता है। गुरुकुल वाटिका में ही अपना गन्ने का रस निकालनेका कोल्हू लगा है। आवश्यकतानुसार रस निकालकर ब्रह्मचारियों को दिया जाता है। इस वाटिका के अध्यक्षका काम गुरुकुल के पुराने सेवक म. कन्हैयालालजी निर्वाहमात्र वेतन लेकर बड़ी योग्यता से कर रहे हैं। ५ माली और काम करते हैं। इस वाटिका पर वर्ष में लगभग १३००) व्यय तथा १७००) आय होती है।

भविष्य में गुरुकुल को स्वावलम्बी (self supporting) बनाने के लिये बाग को बहुत बढ़ाने का विचार है।

१२ वार्षिकोत्सव

सामान्यतया फरवरी के अन्तिम सप्ताह में या मार्च में गुरुकुल का

गुरुकुल की यज्ञशाला।

यह प्रार्थना-मन्दिर आश्रम के बीचों-बीच बना हुआ है। इस के आठों कोनों पर सुन्दर नीम के वृक्ष लगे हुए हैं।

वार्षिकोत्सव होता रहा है। उत्सव में श्री स्वामी श्रद्धानंद जी, स्वामी सर्वदानंद जी, स्वामी सत्यानंद जी, श्री नारायण स्वामी जी, स्वामी चिदानंद जी, पं० रामचन्द्र जी देहलवी, पं० बुद्धदेव जी, महता जैमिनी जी, डा० भगतराम जी, पं० ज्ञानचन्द्र जी, पण्डित यशपाल जी, पण्डित प्रियव्रत जी, म० कृष्ण जी, आचार्य रामदेव जी, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी, आचार्य देवशर्मा जी, पण्डित सत्यव्रतजी, प्रो० इन्द्रजी, प्रो० धर्मेन्द्रजी, श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी, ला० देशबन्धुजी इत्यादि आर्य नेताओं के अलावा देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी, श्रीयुत डा० मुंजे, श्री पण्डित नेकीरामशर्मा, डा० सत्यपाल, बाबू श्री प्रकाश एम० एल० ए० पण्डित ठाकुरदास भार्गव एम० एल० ए०, कुंवर रणंजय सिंह जी राजकुमार अमेठी राज्य, श्री हीरालालगांधी इत्यादि प्रतिष्ठित महानुभाव भी पधारते रहे। आसपास के ग्रामों तथा शहरों से लग भग 1½ हजार जनता इस धर्म मेले में एकत्रित होती है।

१३ सरस्वती यात्राएँ

बरसात की मौसम में प्रायः प्रति वर्ष ब्रह्मचारियों को दो समूहों में पहाड़ पर लेजाया जाता रहा है छोटे ब्रह्मचारी सोलन, सपाटू, पछाद नाहन तथा शिमला आदि स्थानों पर लेजाकर रखे जाते रहे हैं।

बड़ी श्रेणियों के ब्रह्मचारी शिमला, क्वेटा काशमीर डलहौजी, चम्बा, नाहन आदि पहाड़ों की यात्रार्थ जाते रहे हैं।

भविष्य में ब्रह्मचारियों को किसी स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी स्थानपर लेजाकर गरमी तथा बरसात की, स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाली, मौसम से बचाकर ३-४ मास तक ठहराने के लिये स्थिर प्रबन्ध करने का विचार है। आशा है यह प्रबन्ध उदार दानी महानुभावों की कृपा से शीघ्र हो जायगा।

१४ वार्षिक आय तथा व्यय

गुरुकुल का आनुमानिक वार्षिक आयु तथा व्यय निम्न प्रकार है—

आय		व्यय	
विभाग	धन	विभाग	धन
१ शुल्क	१००००)	१ भंडार	१००००)
२ गौशाला	१८००)	२ गौशाला	१८००)
३ दायाद्य	८५०)	३ दायाद्य	२५०)
४ वाटिका	१६००)	४ वाटिका	१३००)
५ महानिधि	५०००)	५ वार्षिकोत्सव	२००)
		६ शिक्षा	३५००)
		७ कार्य्यालय	७००)
		८ चिकित्सालय	१०००)
		९ गुरुकुल प्रचार	२००)
		१० मन्दिर सुधराई	३००)
योग	१९२५०)	योग	१९२५०)

१५. गुरुकुल में बालकों को दाखिल करने के नियम

१—गुरुकुल में नये बालकों का दाखला वार्षिकोत्सव के अवसर पर (फरवरी के अन्तिम सप्ताह में) होता है, विशेष अवस्था में वर्ष के बीच में भी बालक प्रविष्ट कर लिये जाते हैं।

२—बालककी आयु प्रवेश के समय ६ वर्ष से न्यून तथा १० वर्ष से अधिक न होनी चाहिए। बालक सब प्रकार से स्वस्थ होना चाहिए।

३—प्रवेश के समय वस्त्रों के लिए ४०) लिये जाते हैं। इसके बाद वस्त्र गुरुकुल से मिलते रहते हैं। जो महानुभाव वस्त्र स्वयं बनाकर भेजना चाहें वे नये पायदार तथा शुद्ध स्वदेशी वस्त्र भी दे सकते हैं।

४:—प्रत्येक संरक्षक को चार मास का अगाऊ शुल्क ४०) प्रवेश के समय देना होगा। यह धन ब्रह्मचारी के शिक्षा समाप्त करने पर लौटाया जायगा।

मासिक व्यय

खान-पान, कपड़े, डाक्टरी इलाज आदि के लिए शुल्क सब गुरुकुलों से न्यून निम्न प्रकार मासिक लिया जाता है:—

१म से ३य तक	१०) मासिक
४र्थ से ५म तक	१२) मासिक
६ष्ट से ८म तक	१६) मासिक

इसके अलावा यदि किसी कारण से ब्रह्मचारी गुरुकुल से बाहर यात्रादि में जायेंगे तो मार्गव्यय संरक्षकों से लिया जायगा।
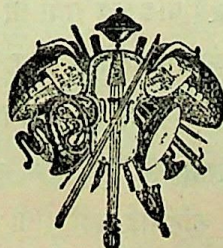
इस गुरुकुल की विशेषतायें

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की जो २ विशेषतायें हैं, उनके अलावा इस गुरुकुल की कुछ ऐसी खास विशेषतायें हैं जो शायद ही किसी शिक्षणालय को प्राप्त हों:—

१. सर्वोत्तम जलवायु

यहां का जलवायु बहुत उत्तम है जिसके कारण ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है। ब्रह्मचारियों के शरीर हृष्ट पुष्ट तथा कद लम्बा रहता है। जल मीठा तथा भोजन को शीघ्र पचा देने वाला है। आसपास के गांवों तथा थानेसर शहर के पेट की बीमारी के बहुत से रोगी यहां का जल ले जाते हैं। स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी जब कभी अस्वस्थ होते थे स्वास्थ्य लाभार्थ यहीं आकर रहा करते थे। संन्यास लेने के बाद उनका स्वास्थ्य गिर गया था, तब स्वास्थ्य लाभ के लिए वे लगातार ६ मास यहीं रहे थे। ६ महीने बाद उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा और वजन ५६ पौंड बढ़ गया था। (ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पुस्तक में अन्यत्र उन्हीं के हाथ का लिखा लेख देखिये)

२. स्थान की सुविधा

यद्यपि यह गुरुकुल बस्ती से दूर एक सुरम्य जङ्गल में है तो भी गुरुकुल तक जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। गुरुकुल से १ मील दूरी

ब्रह्मचारियों के शरीरिक व्यायाम के खेल
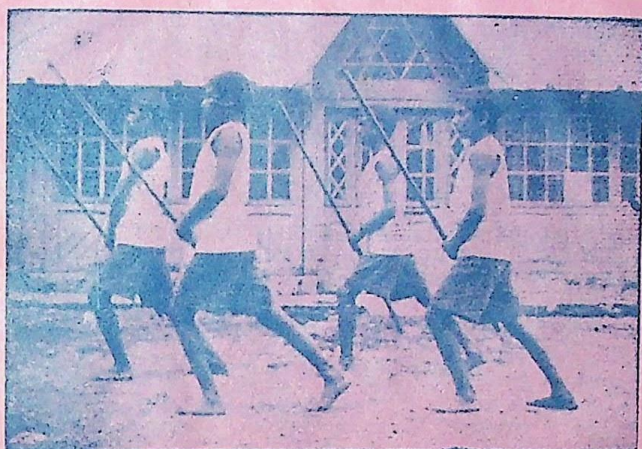
ब्रह्मचारी लाठी चलाने का अभ्यास कर रहे हैं।

ब्रह्मचारी तलवार से खेलना सीख रहे हैं।

पर थानेसर स्टेशन, तथा ढाई मील की दूरी पर कुरुक्षेत्र जङ्क्शन स्टेशन है। दोनों स्टेशनों से गुरुकुल तक पक्की सड़क जाती है। सब प्रकार की सवारियां मिल जाती हैं। गुरुकुल के चारों तरफ सुन्दर ऐतिहासिक स्थान हैं जिन्हें देखने के लिये लाखों नर नारी आते हैं।

३. गुरुकुल का अपना बाग

ब्रह्मचारियों को ताजा सब्जी और फल देने के लिये गुरुकुल का अपना लगभग ७० बीघे का बाग है। इसमें पांच माली काम करते हैं। इस बाग से हर एक मौसम की सब प्रकार की सब्जी इतनी तय्यार होती है कि ब्रह्मचारियों के इच्छापूर्वक प्रयोग में लाने के बाद काफी मात्रा में बाहर भी जाती है। बाग में आम, नारङ्गी, सन्तरा, मालटा, केला, अञ्जीर, अनार, अमरूद, आड़ू, अंगूर आदि फलों के भी वृक्ष हैं। इनसे पर्याप्त मात्रा में ताजे फल ब्रह्मचारियों को मिलते रहते हैं। बाग में गन्ना तथा पौंडा भी बोया जाता है। यहां के ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य के अति उत्तम रहने का एक बड़ा कारण यह भी है।

४. गुरुकुल की अपनी पशुशाला

ब्रह्मचारियों को शुद्ध दूध देने के लिये गुरुकुल की अपनी पशुशाला है जिसमें गाय, भैंस, बछड़े, बछड़ी, बैल सब मिला कर लगभग ८० पशु हैं। प्रातः तथा सायं दोनों समय ताजा दूध इस पशुशाला से पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। छोटे बच्चों की सेहत अच्छी रहने का एक बड़ा कारण यह भी है।

५. अन्य प्रबन्ध

गुरुकुल में आटा पीसने का अपना खरास है जिससे ब्रह्मचारियों को मशीन के हानिकारक आटे के स्थान पर चक्की का आटा मिलता है। हाथ का कुटा चावल ही बहुधा प्रयोग किया जाता है। रस के लिये अपना कोल्हू है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य इससे और भी अच्छा रहता है।

६. गर्मियों में पहाड़ की यात्रा

वर्षा ऋतु में मलेरिया ज्वर तथा गरमी के प्रकोप से बचाने के लिये प्रति वर्ष छोटे तथा बड़े सब ब्रह्मचारियों को स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी स्थानों पर यात्रार्थ ले जाया जाता है। बड़े ब्रह्मचारी पिछले वर्षों में काश्मीर, डलहौज़ी, शिमला, क्वेटा आदि स्थानों की तथा छोटे नाहन, सपाटू, सोलन, पछाद आदि स्थानों की यात्रा कर चुके हैं।

वर्षा ऋतु के हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिये आगे से यह भी प्रबन्ध किया जा रहा है कि ब्रह्मचारी ३-४ महीने किसी स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी स्थान पर रहा करें इसके लिये शीघ्र ही किसी स्थान पर स्थायी प्रबन्ध किया जाने वाला है।

७. अपूर्व शारीरिक व्यायाम

प्रतिदिन शिक्षा के साथ २ ब्रह्मचारियों को प्रातः सायं दोनों समय व्यायाम कराया जाता है। साथ ही लाठी चलाने का अभ्यास, लेजम का व्यायाम, जिम्नास्टिक, ग्रुपमेकिंग, तलवार चलाना आदि भी सिखाया जाता है। इसके लिये गुरुकुल में एक योग्य शिक्षक नियत हैं जो तीरन्दाजी (धनुर्विद्या) में बड़े योग्य हैं।

८. उत्तम प्रबन्ध

ब्रह्मचारियों के रहने के लिये, पढ़ने के लिये, नहाने के लिये, सब प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सुन्दर लगभग १। लाख की लागतके पक्के मकान बने हैं। खेलने के लिए चारों तरफ़ खुले मैदान हैं। चारों तरफ़ ४ सुन्दर मीठे जल के कुएँ हैं। आश्रम के बीचोंबीच तथा भंडार में हैंड पंप लगे हैं जिनका जल बहुत स्वास्थ्य प्रद है।

९. योग्य अध्यापक

शिक्षा तथा ब्रह्मचारियों के निरीक्षण का काम योग्य अध्यापकों के हाथ में है जिनमें से अधिक, तर गुरुकुलों के स्नातक हैं तथा विश्वविद्यालयों की उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। यही कारण है कि परिणाम बहुत अच्छा रहता है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के बारे में कुछ प्रतिष्ठित महानुभावों की

सम्मतियें

महामना श्री पं० मदनमोहन जी मालवीय

"मैंने आज इस गुरुकुल का अवलोकन किया सब ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अत्युत्तम प्रतीत होता है। ब्रह्मचारियों के चेहरोंपर तेज चमकता दिखाई देता है। गुरुकुल का सब प्रबन्ध तथा व्यवस्था अत्युत्तम है। मैं इस शिक्षणालय की, जिसमें ब्रह्मचर्य रक्षा की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है, हार्दिक उन्नति चाहता हूँ।"

श्रीयुत डाक्टर बी० एस०, मुंजे

"इस राष्ट्रीय शिक्षणालय को देखकर अपूर्व प्रसन्नता हुई। यही वह वास्तविक शिक्षणालय हैं जिनसे देश धर्म तथा जाति के सच्चे सेवक तय्यार होसकते हैं। ब्रह्मचारियों के हँसमुख तथा स्वस्थ चेहरों को देखकर तथा गुरुकुल का प्रबन्ध देखकर प्रसन्नता हुई।"

श्रीयुत चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी

आजका दिन बड़े आराम तथा आनन्दसे गुरुकुल में व्यतीत हुआ। यह एक आदर्श संस्था है जिसका प्रबन्ध अत्युत्तम है। बालकों की देख-रेख बहुत अच्छी तरह की जाती है। मैं गुरुकुल में अधिकारियों का इस

स्वागत तथा सत्कार के लिये जो मेरा तथा मेरे साथियों का उन्होंने किया है कृतज्ञ रहूँगा। मेरा इस सुन्दर स्थान को छोड़ने को जी नहीं करता।"

११–५–३४

श्री डा० गोकुलचन्द्र नारंग मन्त्री लोकलसैल्फ़ गवर्मैंट पंजाब

मुझे यह संस्था देखकर अपार प्रसन्नता हुई। सभी ब्रह्मचारी स्वस्थ तथा प्रसन्नचित्त दीखते हैं। संस्था का वायुमँडल उत्तमशिक्षा, सादगी सदाचार तथा सेवा के भावों से बना हुआ है। मैं इस गुरुकुल की सब तरह से उन्नति चाहता हूँ।"

३-१–३१

श्री होती के नवाब साहब

इस गुरुकुल को जो कि एक आदर्श शिक्षणालय है देख कर मुझे अपार प्रसन्नता हुई। बालकों के उत्तम स्वास्थ्य तथा हंसमुख चेहरे यह प्रगट करते हैं कि बच्चे अपने माता पिता के संरक्षण से दूर रहकर भी अच्छी तरह से पाले पोसे जाते हैं। मैं इस संस्था की सब तरह से उन्नति चाहता हूँ।

१६-७-३१

नवाब जुल्फ़िकार अली खाँ

मैं इस संस्था को तथा इस के उत्तम प्रबंध को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। यह संस्था बहुत होनहार प्रतीत होती है। मैं सब प्रकार इसकी सफलता चाहता हूँ।

१६-७-३१

श्री पं० नेकीराम जी शर्मा

इस आदर्श राष्ट्रीय संस्था में पधारने का मुझे गौरव है। सचमुच इसी प्रकार के शिक्षणालयों से भारत के बन्धन काटने वाले सेवक पैदा होंगे। मुझे पूरा निश्चय है कि यह संस्था अपने संस्थापक स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्दजीकी आशाओं को पूर्ण करेगी।"
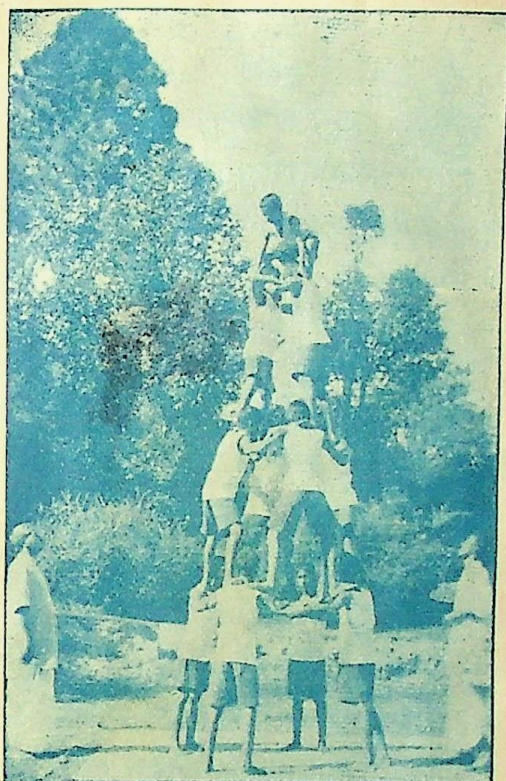
ब्रह्मचारियों के शारीरिक व्यायाम का एक दृश्य।
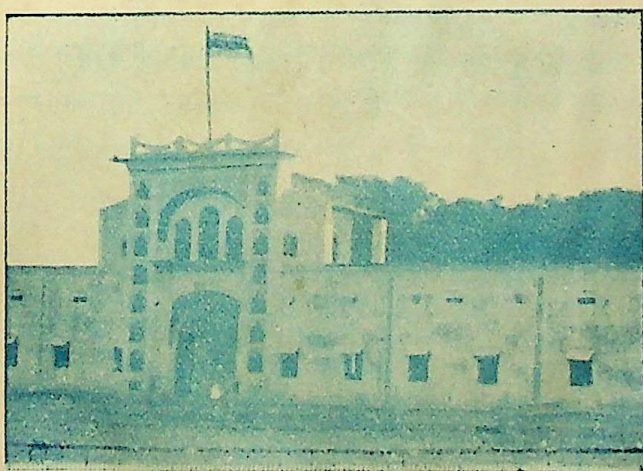
मुख्यद्वार के सामने का दृश्य।
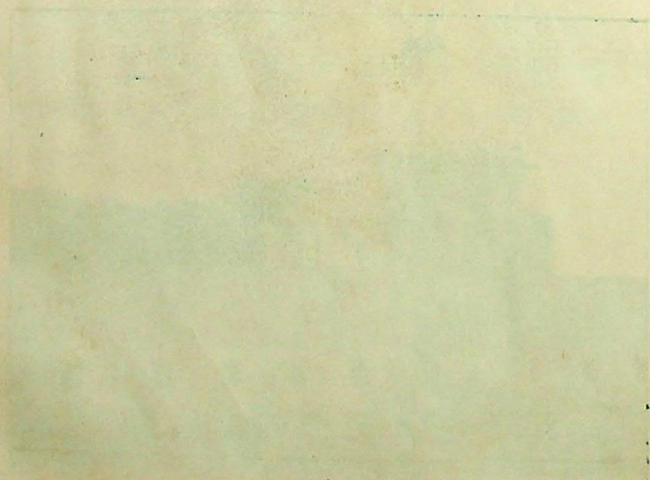
श्रीयुत डा० सत्यपाल जी लाहौर

इस गुरुकुल को देखकर मुझे अपार प्रसन्नता हुई। सब ब्रह्मचारी आनन्द प्रसन्न और स्वस्थ नज़र आते हैं। सब मकानात स्वच्छ और प्रबन्ध अत्युत्तम है। जो महाशय इसका प्रबन्ध करते हैं मुझ में उनकी पूरी तरह प्रशंसा करने के लिए पर्याप्त शब्द नहीं हैं। मैं इस गुरुकुल की उन्नति चाहता हूँ।"

अन्य प्रतिष्ठित यात्री

इन ऊपर लिखे महानुभावों के अलावा श्रीयुत नृसिंह चिन्तामणि केलकर, श्री कृपलानी जी, श्रीयुत एस० आर० दास (वायसराय की कार्य कारिणी के ला मैम्बर), कुँवर रणंजय सिंह जी एम० एल० ए० राजकुमार अमैठी, श्रीयुत श्री प्रकाश जी एम० एल० ए० श्रीयुत देवता-स्वरूप भाई परमानन्द जी एम० एल० ए०, श्री पं० ठाकुरदास जी भार्गव एम० एल० ए०, ला० देशबन्धु जी गुप्ता एम० एल० ए० डाइरैक्टर तेज, श्री चौ० मुख्तार सिंह जी एम० एल० ए० आदि महानुभाव समय २ पर पधारकर इस संस्था का अवलोकन कर प्रसन्नता प्रकट करते रहे हैं। स्थानाभाव से सबकी सम्मतियां यहां देने में असमर्थ हैं।

आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता

आर्य समाज के प्रायः सभी गण्यमान्य नेता यहां पधार चुके हैं और बड़ी उत्तम सम्मति इस कुलके बारे में देते रहे हैं। उनकी सम्मति यहां नहीं दी गई क्योंकि वे तो गुरुकुल के ही हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के स्नातक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ८म श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त करके गुरुकुलकांगड़ी में शिक्षा समाप्त करके अब तक निम्न स्नातक बन चुके हैं:—

१. हरिश्चन्द्रजी २. प्रियव्रतजी ३. हरिवंशजी ४. दिलीपचन्द्रजी ५. दीपचन्दजी ६. ओंप्रकाश जी ७. शिवप्रसाद जी ८. प्रकाशचन्द्र जी ९. जगदीशजी १०. रामस्वरूप जी ११. धर्मदत्तजी १२. भीमसेनजी १३. विश्वनाथजी १४. पूर्णचन्दजी १५. प्राणनाथजी १६. राजेन्द्रजी १७. केशवदेवजी १८. वीरेन्द्रजी १९. देवनाथजी २०. हरिश्चन्द्रजी २१. विद्यारत्नजी २२. दलीपचन्दजी २३. रामप्रसादजी २४. सत्यदेवजी २५. प्रेमसागरजी २६. पूर्णचन्द्रजी २७. परमानन्दजी २८. सत्यदेवजी २९. सुधाकरजी ३०. विद्यानिधिजी ३१. रामेश्वरजी ३२, विश्ववीरजी ३३. सोमकीर्तिजी ३४. ब्रह्मानन्दजी ३५. आत्मानन्दजी ३६. हरिदत्त जी ३७. युधिष्ठिरजी ३८. विद्यानन्दजी ३९. सुदर्शनजी ४०. सोमदत्तजी ४१. सुभाषचन्द्रजी ४२. सुयोधनजी ४३, विजयकुमारजी ४४. धारेश्वरजी ४५. इन्द्रचन्द्रजी ४६. वीरेन्द्रजी ४७. यशपालजी ४८. जगदीशजी ४९. ५०. सत्यभूषणजी ५१. ओंदत्तजी ५२. सोमदेवजी ५३. हरिप्रकाशजी ५४. मेघाव्रतजी ।

नोटः—दुख है कि इनमें से पं० दलीपचन्दजी का रोग से तथा इन्द्रचन्द्रजी का क्वेटा भूकम्प से स्वर्गवास हो चुका है। उपरोक्त स्नातकों के अलावा लगभग ३० ब्रह्मचारी यहां की शिक्षा समाप्त कर गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय तथा महाविद्यालय विभाग में पढ़ रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० सत्यव्रतजी
की
मंगल कामना तथा संदेश

—✻—

रुकुल कुरुक्षेत्रकी रजतजयन्ती १९३८ में मनाई जायगी। गुरुकुल कांगड़ी की जितनी शाखाएँ हैं उनमें गुरुकुल कुरुक्षेत्र का बहुत ऊँचा स्थान है। इस शाखा में पढ़े हुए ५४ ब्रह्मचारी अब तक स्नातक भी बन चुके हैं और देश, धर्म तथा जाति की सेवा कर रहे हैं। इस स्थान को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने चुना था और इस शाखा की उन्हीं के करकमलों से स्थापना हुई थी। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सौभाग्य हैं कि उसे पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार जैसे उत्साही कार्यकर्त्ता प्राप्त हुए हैं। अगर यह कहा जाय कि पं० सोमदत्त जी इस गुरुकुल के प्राण हैं तो कोई अत्युक्ति न होगी। उन्हीं के उद्योग से जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। परमात्मा करे जिन सद्भावनाओं से इस गुरुकुल की स्थापना हुई वे युग-युग तक इसके आधार में काम करती रहें और यह संस्था दिनों दिन उन्नति करती रहे।

सत्यव्रत

१३-४-३७ मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी।

गुरुकुलकांगड़ी के आचार्य श्री पं० देवशर्मा जी
की
आर्य जनता से अपील

—❀—
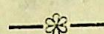
र्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र अब अपने २५ वें वर्ष को पूरा कर रहा है और वहांके सफल और लोकप्रिय मुख्याधिष्ठाता श्री पं सोमदत्त जी विद्यालंकार इस १९९४ के अन्त में होने वाले अपने वार्षिकोत्सव को गुरुकुल कुरुक्षेत्र की रजतजयन्ती के रूप में विशेष उत्साह से मनाना चाहते हैं। मैं उनको इस रजतजयन्ती की हृदय से सफलता चाहता हूँ।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र कई दृष्टियों से गुरुकुल कांगड़ी की पंजाब स्थित शाखाओंमें सर्वश्रेष्ठ है। इसका प्राय: सब श्रेय श्री पं०सोमदत्तजीको है। उनका ब्रह्मचारियों से भ्रातृवत् प्रेम, उनका परिश्रम, उनकी कार्य कुशलता सर्व विदित है और मुझे अभी उनसे इससे भी अधिक आशायें हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेष प्रिय था इस बात को स्मरण कराना भी शायद इस अवसर पर असंगत नहीं होगा।

अत: मैं जनतासे आशा करता हूँ कि इस वर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अधिकारियोंने जो २५०००) एकत्र करनेका निश्चय किया है उसे वे अपने उदार दानों द्वारा अवश्य पूरा करें। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पढ़े सब स्नातक इसमें अपनी जिम्मेदारी विशेषतया अनुभव करेंगे तथा सभी गुरुकुल प्रेमी अपने तन और मन को कीमती सेवाओं से भी इस लोकहितकारी संस्था को लाभ पहुंचायेंगे।

परमेश्वर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इस शुभ उद्योग को पूर्ण सफलता प्रदान करें।

देवशर्मा

२६-४-३७ आचार्य गुरुकुल कांगड़ी।

ब्रह्मचारियों के शरीरिक व्यायाम के खेल

ब्रह्मचारी ग्रुप-मेकिंग का खेल कर रहे हैं।

ब्रह्मचारियों का स्तूप-निर्माण।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र को दान देने वाले

महानुभावों की दान सूची

१००००) ला० ज्योतिप्रसाद जी रईस थानेसर

५००) श्री ला० पतराम जी प्र० आ० स० नरवाना

५०) ,, ,, पतराम जी ,, ,,

३२०) ,, बाबू मुकन्दलाल जी रईस खेडी दाब दलान

६०) आर्य समाज रादौर

१००) श्री धर्मपत्नी जी श्री ला० ज्योतिप्रसाद जी थानेसर

५०) ,, ला० परसराम s/o रघुनाथ दास जी ,,

५०) मीर मरातब अली शाह जी तहसीलदार थानेसर

१००) म० पोल्हू राम जी थानेसर

१२०) म० भाऊ जी ठेकेदार तथा भोजा जी खेमाराम जी रतना

१०००) श्री ला० गंगाराम जी इस्मायलाबाद

६०) ,, ,, गंगाराम जी इस्मायलाबाद गौशाला

१६००) ,, ,, ज्योतिप्रसाद जी रईस थानेसर
१०००) ,, ,, गंगाराम जी ,, इस्मायलाबाद
२०००) ,, ,, भगीरथ लाल जी ,, थानेसर
१८०) ,, ,, मुकन्द लाल जी ,, खेड़ी दाव
५००) ,, ,, आशा राम जी ,, शाहपुर
८०) ,, बाबू रामस्वरूप जी सं० ब्र० दीपचन्द
५३।) ,, मन्त्री जी आर्य्य समाज शाहबाद
१००) ,, ला० गंगाराम जी इस्मायलाबाद
८०) ,, ला० बिशम्भरदास जी मन्त्री आ० स० रादौर
१५०) ,, मीर मरातब-अलीशाह जी तहसीलदार थानेसर
१००) ;, ला० सुन्दरदास जी दिल्ली
२००) ,, ,, भगीरथ लाल जी रईस थानेसर
६५) ,, ,, उदयराम जी आर्य्य स० लाडवा
१००) ,, डा० इन्द्रमणि जी लखनऊ
५०) ,, ला० गंगा राम जी इस्मायलाबाद
१०२) ,, बाबू बैजनाथ जी वकील करनाल
१५०) ,, रत्न देवी जी भनेनीं ला० राधा कृष्ण जी अमृतसर
१००) ,, दुर्गादेवी जी भगिनी ,,
५६) ,, शालिगराम जी क्लर्क T. E. ब्रांच नैराबी (अफ्रीका)
२५०) ,, ला० जीता राम जी लोहा वाले पानीपत
५०) ,, ,, खेम चन्द्र s/o हीरालाल जी पानीपत
५०) ,, B. R. शर्म्मा रोलजैरट (अफ्रीका)
५०) ,, म० बृजमोहन लाल जी दिल्ली
१५०) आर्य समाज करनाल
७३॥) ,, ,, पानीपत

६०॥) ,, ,, कैथल

५१) श्री ला० रिखीराम जी चौधरी कैथल

१००) ,, ,, गंगाराम जी इस्मायलाबाद

१०१॥।≡) आर्य्य समाज ठोल

२००) श्री ला० भगीरथ लाल जी थानेसर

७०) आर्य्य समाज रादौर

१००) श्री ला० मिट्ठनलाल जी ठेकेदार जींद

१५४।) आर्य्य समाज शाहाबाद

६३) ,, ,, जीदे

७२।) ,, ,, थम्बड़

३००) म० बृजमोहन जी दिल्ली

३००) श्री ला० आशाराम जी रईस शाहपुर

५०) ला० हंसराज रलाराम जी अम्बाला

२००) श्री बांकामल जी रईस काशीपुर

१०१) पं० विनायक राम जी धनबाद

१२६) म० मुन्शीराम जी मुथरा

५०) भगत अर्जुन लाल जी पानीपत

१२३) आर्य समाज पानीपत

५१) गुप्तदान श्री नौबतराय जी द्वारा

७६) आर्य समाज करनाल

५०) ला० नरसिंह दासजी पूंडरी वाले पानीपत

६२) आ० स० कैथल

१००) ला० प्यारेलाल जी रईस करनाल

५५) आ० स० शाहाबाद

१५०) श्री ला० भगीरथ लाल जी रईस थानेसर

७५) आ० स० लाडवा
४७॥) म० मोहनलाल जी सुनाम
४००) श्रीमती द्रोपदी देवी व धर्म्मपत्नी लाला काशीराम व० धर्म्मपत्नी बनारसी लाल जी सराफ अम्बाला छावनी
५०) आर्य्य समाज रादौर
७०) ला० नारायण दास बनवारी लाल जी दिल्ली
१००) श्रीमती द्रौपदी देवी जी भागीरथी देवी व ला० काशीराम बनारसीदास जी करनाल
५००) ला० जीताराम जी लोहे वाले पानीपत
२०००) श्री ला० भगीरथ लाल जी रईस थानेसर
५००) ला० शालिगराम जी भल्ला कैथल
३००) ला० माशूराम जी महाजन पूण्डरी
२००) आर्य समाज कैथल
५०) श्री ला० गंगाराम जी इस्मायलाबाद
५०) श्री बाबू लछमन दास जी तहसीलदार थानेसर
३००) श्री ला० नरसिंह दास जी व ला० नन्दलाल जी गुमथलागढ़
५०) श्री ला० रामगोपाल जी करनाल
१००) आर्य समाज पानीपत
५१) ला० बनवरीलाल नारायणदास जी ठेकेदार दिल्ली
६०) ला० बनवारीलाल जी दिल्ली शहर
५००) ला० हंसराज आत्माराम जी कैथल
५०) ला० द्वारकादास जी आढ़ती करनाल
५०) म० विजयसिंह जी भाऊपुर द्वारा
५०) ला० दिल्लाराय जी नलवी

१००) श्री धर्मपत्नी ला० ज्योतिप्रसाद जी थानेसर

६०) आ० स० कैथल

१००) म० माधोराम जी अम्बाला

५०) म० गंगाराम जी अपील पर

३००) ला० विश्वेश्वरनाथ जी अम्बाला छावनी

६०) म० बख्तावर सिंहजी लखनऊ

५०) श्रीमती पन्नादेवीजी पटियाला

१००) आ० स० पानीपत

१००) लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार दिल्ली

५०) ला० मोहरसिंहदास बृजलाल जी दिल्ली

५००) श्री ला० जगन्नाथ जी नगीनादेवी जी दिल्ली

६५०) ,, ,, ,, ,, ,,

५०) ऋ० भगवानदास जी भटिन्डा

५०) म० शेरसिंह एण्ड ब्रदर्स दिल्ली

१०००) ला० बालकराम जी रईस c/o श्री ला० खेमचन्द जी रईस पानीपत

१८२॥=) म० नीगामल जो हलवाई कैथल

१४६।≡) म० बृजमोहन लाल जी आढ़ती दिल्ली

१००) आ० स० कैथल

१०३) ,, ,, करनाल

५१) ला० प्यारेलाल जी करनाल

१७३) आ० स० पानीपत

५५) ,, ,, ठोल

१००) ला० नरसिंहदास जी ठेकेदार पानीपत

७१) बा० बख्तावरसिंह जी ,, ,,

५०) म० बालकरामजी स्वर्गवासी पानीपत, म० शादीराम जी द्वारा
१००) डा० रामस्वरूप जी गोरखपुर
२००) डा० विशेशरनाथ जी अम्बाला छावनी
५१) म० शोभाराम जी कैथल
२५०) श्री विशनमोहनसहाय जी लखनऊ
१००) म० बदरीप्रसादसिंह जी लखनऊ
५०) डा० रामस्वरूप जी ,,
५०) ला० बनवारीलाल जी दिल्ली
५०) म० जगन्नाथ जी सहारनपुर
६१८) श्रीमती चमेली देवी उर्फ ठाडीदेवी जी करनाल
१००) ला० गणेशीलाल जी लाडवा
१०१) ला० बृजलाल मोहरसिंह जी दिल्ली
५०) ला० श्रद्धाराम जी शाहाबाद
५०) म० तुला प्रसाद ज्वालाप्रसाद जी बुराहानपुर
७५।) आर्य्य समाज सफीदूं
६१) ,, ,, जींद
६१) ,, ,, नरवाना
७०) ,, ,, बरवाला
१५०) ला० बख्तावरसिंह जी ठेकेदार सफीदूं
१५०) ला० रामकृष्णदास सूर्यभान जी कैथल
१००) ल० मनसाराम जी ठेकेदार नरवाना
१००) ,, नरसिंहदास जी ठेकेदार पूण्डरी
२००) ,, राधाकृष्ण जी अमृतसर c/o गंगाराम राधाकृष्ण
६६।) आर्य समाज कसौली
३२०) ,, ,, पानीपत

१४१) ला० बनवारीलाल जी ठेकेदार दिल्ली
५०) म० भगवानदास जी आर्य
१०००) सेठ जयनारायण रामचन्द्र जी पोद्दार कलकत्ता
५०) ला० तुलजाप्रसाद ज्वालाप्रसाद जी नरहनपुर
१००) म० विशम्भरदास जी अम्बाला छावनी
१०१।।) आर्य समाज कैथल
८६।।) ,, ,, जम्मू
५०) म० मिट्ठनलाल जी ठेकेदार जींद
५२=) आ० स० रादौर
५०) बाबू ताराचन्द जी S.D.O. प्रतापगढ़
५०) डा० भानाराम जी अम्बाला छावनी
२००) पं० जानकीनाथ जी रुल्ला खेड़ी
८००) पं० जयनारायण जी दिल्ली
५००) ,, हीरालाल जी S.D.O. पेशावर
१००) श्री ला० भगीरथलाल जी थानेसर सलपानी भूमि द्वारा
५०) डा० गंगारामजी धनौर
५०) म० पोलाराम जी
५०) ,, खुशीराम जी केसरी
६७) चौ० सिंगारसिंह जी सालव द्वारा
१४६) ला० बनवारीलाल जी ठेकेदार दिल्ली
१००) ,, नारायणदत्त जी ,, ,,
१००) गिरधारीलाल मिलखासिंह जी ,,
१०१) सेठ मोहरसिंह बृजलाल जी ,,
१००) म० श्रीरामजी दीनानाथ जी ,,
५१) ला० प्रयागदास मंगलसैन जी ,,

३५४) बा० बनवारीलाल जी ठेकेदार दि
१००) श्रीमती धर्मपत्नी ला० नौबतराय
मैनेजर गुरुकुल कुरुक्षेत्र
५००) मि० शिवप्रसाद रंगीलाल जी लुध
५०) म० लौंगीमल जंगीमल जी पूण्डरी
५०) म० कुन्दनलाल जी पूण्डरी
५०) बाबू श्यामसुन्दर जी एकौन्टैन्ट अ
१००) म० रामजीदास बद्रीदास जी पूं
१००) श्री गंगाराम जी इस्मायलाबाद ार
५०) म०कलामल जी समाधभाई द जी
१२५) ला० गोपीराम रिखीराम जी जी
५०) ,, दौलतरामजी जिलेदार ,,
५०) ,, उदयराम कुन्दनलाल जी शाहा
२००) म० विशेशरनाथ जी अम्बाला छा
१७४) आ० स० लाडवा
५०) म० खुशीराम जी केसरी
१००) गुप्तदान ला० नत्थूराम जी शाहाब
१००) ला० सीताराम जी मन्त्री गुरुकुल
५०) आर्य समाज सालवन
७०) ला० द्वारकादास करनाल
५००) ला० गणेशीलाल दुनीचन्द पानीप
३३४) आर्य समाज पानीपत
३००) सरदार पटकासिंह दिल्ली
१००) आ० स० कैथल
१००) ला० जैसीराम आत्माराम जी कैथ